





प्यारे किसान भाइयों, बहनों, मेरे प्यारे बच्चों व संगठन के पदाधिकारियो, साथियो, स्वराज मित्रों

नये साल 2022 की हार्दिक

शुभकामनाये !!!

वैसे तो हमारा नया साल, साल में कई बार हम मनाते है और हमारा नया साल खेती के हिसाब से होता है, दिवाली के बाद भी मनाते हैं विक्रम संवत का नया साल भी होता है परन्त आज के समय में पूरी दुनिया 1 जनवरी को ही नया वर्ष मानने लगी और हमारे

चलन में भी यह आ गया है इसलिए हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसे देखना व मानना । चूंकि वाग्धारा वर्ष दर वर्ष अपने कार्यक्रमों में बदलाव सच्ची खेती, सच्चा बचपन ,सच्चे लोकतंत्र के साथ आदिवासी तौर-तरीके, रीति रिवाज, परंपराओं को सहेजने को लेकर के करता रहा है और हम नियमित बात करते रहे कि हम अपने आप में, हमारे परिवार में, हमारे संगठन में, हमारे गांव में इस बदलाव को किस तरीके से देखते हैं, किस तरीके से इस बदलाव को स्थापित करते हैं । देश दुनिया के कई साथी हमारे इस प्रयास को देखने के लिए आते हैं, समझने का प्रयास करते हैं और उन्हें ख़शी भी मिलती है हमारे बीज सहेजने के तरीके, हमारे खाने के तरीके, हमारी मिट्टी बचाने के तरीके जानकर । जब वो हमारे किसान भाइयों से मिलते हैं ,पूछते हैं,बात करते है तो उसको सुनकर वह बहुत प्रसन्न होते है और उस बदलाव के बारे में और दुनिया के दूसरे कोने में जा करके बताते भी है।

मेरे 20 साल के गहराई से समुदाय के साथ काम करने के अनुभव में मैंने एक बात हमेशा यह देखी है कि हम हमारे पुराने किए हुए प्रयासों को भूल जाते हैं और नई चीजों की ओर भागते हैं कई बार हम इस बात को भूल जाते हैं कि हमारे पूर्वज कोई पेड़ लगाकर गए होंगे सपनों के साथ, कि भविष्य में यह बहुत कुछ देगा और हममें से कोई नौजवान यह कहता है कि यह पेड बीच में आ रहा है उसको हम काट डालते हैं, तो हमारी इतने वर्षों की तपस्या, उस पेड़ की तपस्या, हमारे पूर्वजों के सपने वो तुरंत ही वहां से उजड़ जाते हैं ये पेड़ का एक उदहारण है। ऐसे ही कई सपने विकास के हो सकते हैं, ऐसे ही कई सपने हमारे अधिकारों के हो सकते हैं, हमारे जीवन में बदलाव के हो सकते हैं, जो आपने पिछले तीन-चार वर्षों में अपने संगठन के साथ, वाग्धारा के साथ मिलकर के देखे होंगे। मैं आग्रह करना चाहूंगा कि जो गत वर्ष समागम में बैठकर या हम लोगों ने आपस में गांव में बैठ कर के हमारे गांव के लिए कुछ सपने देखें उनमे से बीते साल में क्या प्राप्त कर सके, क्या प्राप्त नहीं कर सके उसको लेकर जरुर चिंतन करें और आने वाले 2022 में हम कुछ प्रण ले कि हमारे गांव में बीते वर्ष कितने बीज की खपत हुई, उसमे से इस वर्ष इतने बीज के लिए हम बाजार पर निर्भर नहीं रहेंगे । हमारे कुओं में पानी जो 10 फीट तक रहता था और अभी बहुत नीचे चला जाता है उसके लिए इस साल हम यह प्रयास करे की वो पानी 8 फिट तक आ जाये या नीचे नहीं जाए, उसके लिए हमें क्या प्रयास करने की आवश्यकता है इस पर ध्यान दे । हमारे गांव के बच्चे स्कूल जाने से वंचित ना रहे । पिछली बार 20 बच्चे वंचित थे या कुछ बच्चे वंचित थे तो इस बार एक भी बच्चा वंचित ना रहे । हमारे गांव में कोई भी कुपोषित नहीं रहे, नरेगा के हर परिवार के 100 दिन पूरे हो, युवा यह ध्यान दे की हमारे गांव में कोई भी आश्रित किसी भी प्रकार की पेन्शन से वंचित ना रहे और हम उस मॉडल गांव, मॉडल पंचायत, मॉडल धाणी को विकसित करे जिसमे हर इन्सान ख़ुशी और आनंद से जीवन यापित कर पाए । कई बार जब मै इस तरीके की बात करता हूं या वाते पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंचती है तो ऐसा लगता है कि क्या केवल मात्र हमारा सपना है या यह संभव है ? बिल्कुल संभव है साथियों आपने कई बार देखा होगा हमने कई पहाड़ों को खेतों में परिवर्तित होते हुए देखा है और वह अकेला परिवार करता है बिना किसी सहयोग से । जब वो हो सकता है तो हम गांव के संसाधनों को, हमारे प्रकृति के संसाधनों को बचाते हुए क्यों उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकते और हमें कोई बहत बड़ी बात करने की आवश्यकता नहीं है जो हम नित्य नियमित बातें करते रहते हैं हमारे चर्चा का हिस्सा होता है उन्ही पर सही मायने में काम करने की जरूरत है इसे केवल मात्र कागज या किताब का ज्ञान ना मानकर के व्यवहारिक जीवन में लाने की जरूरत है।

मैं अंत में विशेष रुप से सभी साथियों से कहूंगा कि संगठन के पदाधिकारियों के साथ बैठकर के 2022 का हमारे गांव का सपना कैसा होगा । हमारी सच्ची खेती, सच्चा बचपन और सबसे स्वराज का सपना 2022 का कैसे देखते हैं और पूरा करते है इस पर चर्चा करे और कार्य करे , ताकि जब हम अगले वर्ष दिसंबर में जाएं या वर्ष 2023 में जाएं तो हम गर्व से कह सकें कि हमने जनवरी माह 2022 में यह तय किया था वह हम प्राप्त कर सकें। पूरे वर्ष के लिए आपको कोटिशः कोटिशः शुभकामनाएं!!

> आपका अपना जयेश जोशी, वाग्धारा

खरपतवार प्रबंधन व मृदा स्वास्थ्य

हमारे किसान भाई उन्नत किस्म के बीज, उपयुक्त उर्वरक, नियमित सिंचाई तथा फसल के विभिन्न उपाय जैसे उत्पादन साधनों को वैज्ञानिक विधि से अपनाकर कृषि से अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने के अपने लक्ष्य में अब भी पूर्णतया सफल नहीं हो पा रहे हैं। इसका एकमात्र कारण है कि वे उन्नतशील साधनों को अपनाने के साथ-साथ खरपतवारों के प्रबंधन नियंत्रण पर पूर्ण ध्यान नहीं देते । यदि किसान को अपनी फसल से भरपूर उपज प्राप्त करनी है तो अपनी फसल के शत्र खरपतवारों पर नियंत्रण पाने के महत्व को समझकर उनको नष्ट करना होगा। खरपतवारों की उपस्थिति फसल की उपज को 40 प्रतिशत तक कम करती हैं। स्वाभाविक रूप से उपलब्ध संसाधन - "मिट्टी" को कृषि में एक महत्वपूर्ण भूमिका मिली है क्योंकि किसी भी कृषि फसल की वृद्धि, विकास और उपज सीधे मिट्टी की उर्वरता पर निर्भर करती है । एक अत्यधिक उपजाऊ और स्वस्थ मिट्टी फसल के विकास के लिए अच्छा समर्थन देती है जिससे उच्च उपज मिलती है । हालांकि, खेती के साथ-साथ पूरे मानव समुदाय द्वारा किए गए कदाचार के कारण वर्तमान में स्वस्थ मिट्टी की उपलब्धता घट रही है । सर्वे के अनुसार, हमारी मिट्टी का 75% तक स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि हमारी मिट्टी स्वस्थ है या नहीं , वरना इसका कृषि और कृषक समुदाय पर भी प्रतिकल प्रभाव पड सकता है । इसलिए, किसानों के लिए मिट्टी के स्वास्थ्य के बारे में ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है ।

लेकिन उचित मिट्टी परीक्षण के बिना, अधिकांश



किसान अपनी भूमि के लिए अनुपयुक्त फसलों का चयन करके अनुचित फसलें उगा रहे हैं। इसके अलावा, विशेष फसलों को उगाने के लिए मिट्टी के लिए आवश्यक पोषक तत्वों के बारे में उचित ज्ञान या जानकारी के बिना, किसान उर्वरकों के आवेदन के लिए जा रहे हैं जो धीरे-धीरे मिट्टी में मौजूद प्रमुख पोषक तत्वों को कम कर रहे हैं जिससे मिट्टी बंजर बन रही है उर्वरक के अधिक प्रभाव से भूमि बंजर हो रही है जो फसलों के लिए उपयुक्त नहीं है। इसलिए, किसी भी फसल की बुवाई से पहले, किसानों को वैज्ञानिक रूप से मिट्टी के नमूने एकत्र करने और उनकी मिट्टी की पोषक स्थिति जानने के लिए इसका परीक्षण करने की आवश्यकता होती है और परिणामों के आधार पर, उन्हें अपने खेत के लिए फसलों का चयन करना होगा और रासायनिक उर्वरकों की जगह जैविक खाद प्रयोग में लाने की जरुरत है।

वर्तमान में मिट्टी में केवल आवश्यक जैविक उर्वरकों और कमी वाले पोषक तत्वों को लागू करने की आवश्यकता है, जो न केवल अर्थव्यवस्था के संदर्भ

में लाभदायक है, बल्कि गुणवत्ता व उपज भी बढाता है और मानव और मिट्टी के स्वास्थ्य हेतु भी बहुत

इस तरह के रूप में पारंपरिक खेती प्रथा "जुताई" से कई लाभ मिले हैं जिनके साथ किसान कम निवेश के साथ उच्चतम और गुणवत्ता उपज ले सकते हैं। गर्मियों के दौरान किसानों को खरीफ की खेती (बरसात के मौसम) के लिए अपनी जमीन की जुताई और तैयारी के लिए जाना पड़ता है । गहरी जुताई होगी तो मिट्टी को ढीला करेगी और एक बार मानसून शुरू होने के बाद, मिट्टी ठीक से बारिश के पानी के साथ मिलकर बुवाई के लिए तैयार हो जायेगी । इस पारंपरिक प्रथा के साथ किसान स्वस्थ मिट्टी को बनाने स्वस्थ पर्यावरण हेतु समाज कि महत्त्व पूर्ण भूमिका निभा सकते है ।. एक प्राचीन कृषि गतिविधि होने के नाते "जुताई"का खेती में काफी महत्व है । हालांकि, आजकल किसान इस गतिविधि की उपेक्षा कर रहे हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं जिससे वह बंजर हो जाती हैं । जिससे अस्वास्थ्यकर मिट्टी पौषक तत्वों



से युक्त फसल का उत्पादन नहीं कर सकती है. और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

खरपतवार नियंत्रण

जुताई से घास के खरपतवार और अन्य प्रकार के खरपतवारों को उनकी जड़ों से हटा दिया जाएगा । जिससे उन्हें खेत से पूरी तरह से निकालना आसान हो जाता है । यह फसल के प्रारंभिक चरण के दौरान नुकसान से बचने में मदद करेगा। इसलिए, खरपतवार प्रबंधन में जुताई को बहुत प्रमुख भूमिका मिली है । फसल अवशेष

फसल कटाई के बाद जुताई शेष फसल अवशेषों और अन्य कचरे को मिट्टी में विघटित करें जिससे सबसे अच्छे जैविक खाद की आपूर्ति अगली फसल के लिए होगी । फसल अवशेषों और कचरे को जैविक खाद के रूप में मिट्टी में शामिल करे, जिससे फर्टिलिटी स्टेटस बढ़ेगा और मृदा उत्पादकता में सुधार होगा । कुल मिलाकर, यह मिट्टी में प्राकृतिक और जैविक प्रक्रियाओं में तेजी लाएगा और मिट्टी को स्वस्थ रखेगा।

अंततः मिट्टी संरक्षण, विकास यह हमारे किसानों के हाथों में है और सबसे अधिक कृषि के महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन "मिट्टी" ग्रीष्मकालीन जुताई, अन्य प्राकृतिक और जैविक प्रक्रिया जैसी प्राचीन कृषि प्रथाओं का पालन करे । इसके अलावा कम लागत् वाली खेती तकनीक "जुताई" किसान कर सकते हैं उपज बढ़ा सकते हैं कम निवेश के साथ उनकी कृषि आय बढ़ा सकते है।

> विकास परसराम मेश्राम कार्यक्रम अधिकारी, सच्ची खेती, वागुधारा

नरेगा में 100 दिन पुरे काम करने से जुड़ी है कई कल्याणकारी योजनाएं

किसान-मजदूर साथियों को नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाये!!!

गाँव में लोगो को काम का हक़ दिलवाने में मनरेगा एक कल्याणकारी कानून के रूप में साबित हुआ है। कई मजदुर भाई-बहनों को इसके माध्यम से अपने घर के पास, गाँव में काम मिल जाता है और साथ ही गाँव में अलग-अलग संसाधनों का विकास भी होता है । जो मजदूर इन कार्यों को करते है उनका पसीना गाँव में निर्माण किये संसाधनों के रूप में खुशबू देता है और गाँव के आर्थिक और सामाजिक विकास में हिस्सेदार बनता है । पर क्या आपको पता है की मनरेगा में 100 दिनों का काम हमें, और हमारे परिवार को कई और योजनायो का लाभ दिलवा सकता है ?

चिलए मैं इसके बारे में विस्तार से बताता हूँ! साल 1996 में पुरे देश में निर्माण श्रमिको के कल्याण, सुरक्षा और सेवा की शर्तों के लिए एक कानून आया था । इस कानून को हम "भवन और अन्य सिन्नर्माण कर्मकार कल्याण अधिनियम" के नाम से जानते है । यह कानून, निर्माण श्रमिको के लिए एक वरदान स्वरुप है । इस कानून के अंतर्गत निर्माण श्रमिको के पंजीयन करवाने के लिए व योजनायो का लाभ दिलवाने के लिए "भवन और अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल" बनाने का प्रावधान है । यह मंडल निर्माण श्रमिको के लिए चलाई जा रही नाना प्रकार की योजनायों से जोड़ने का एक माध्यम है । आब आप पूछेंगे की इस मंडल के साथ पंजीयन किस है की आपको पिछले एक वर्ष में निर्माण कार्य जैसे बेलदारी, मिस्त्री, नल-फीटिंग, सेंटिंग आदि अन्य में उठा सकते है |

90 दिवस का कार्य दर्शाना होता है । इस पात्रता को पेश करने के लिए तीन तरीके है दोस्तों:

1. जब आप किसी के निजी मकान/भवन के निर्माण में काम कर रहे हो तो श्रम विभाग द्वारा निर्धारित फॉर्मेट में नियोजक प्रमाण पत्र ले सकते है। नियोजक प्रमाण पत्र माकन बनवाने वाले व्यक्ति द्वारा दिया जायेगा। उदहारण के तौर पर, जब रामलाल ने अपना मकान बनवाया तो उसके यहाँ रामू नाम के व्यक्ति ने काम किया । तो रामू अपना पंजीयन मंडल में करवाने के लिए रामलाल से नियोजक प्रमाण पत्र ले सकता है और उसके साथ रामलाल अपने हस्ताक्षर की हुई आधार कार्ड की प्रति भी नियोजक प्रमाण पत्र

2. अगर श्रमिक किसी ठेकेदार के यहाँ काम करते है तो साल में 90 दिन के काम का प्रमाण ठेकेदार द्वारा भी लिया जा सकता है ।

3. अगर कोई श्रमिक मनरेगा में 90 दिवस का कार्य करता है तो उस स्तिथि में पंचायत सचिव द्वारा भी 90 दिन का कार्य प्रमाणित किया जा सकता है ।

श्रमिक भाइयो और बहनों, जब आप 90 दिन का प्रमाण ऊपर दिए गए तरीको के आधार पर तैयार कर लेंगे तो पंजीयन की प्रक्रिया ई-मित्र के माध्यम से बड़ी आसानी से पूरी कर सकते है । प्रमाण पत्र के अलावा आपको आधार कार्ड और जन-आधार कार्ड की जरुरत ई-मित्र के माध्यम से आवेदन करने में होगी।

श्रमिक साथियों, पंजीयन करवाने के बाद, आपको प्रकार कराया जाये । **''भवन और अन्य सन्निर्माण** श्रमिक कार्ड मिलेगा जिसकी वैधता पांच साल तक पंजीयन करवाने के लिए सबसे महवपूर्ण शर्त यह और अन्य सिन्नर्माण कर्मकार कल्याण मंडल" द्वारा चलाई जा रही निम्नलिखित योजनायो का लाभ

1	निर्माण श्रमिक शिक्षा व कौशल विकास योजना	हिताधिकारियों के बच्चों को कक्षा 6 से आगे तक की पढ़ाई के लिए छात्रवृति राशि रू. 8,000 से 25000/- तक। मेघावी छात्र /छत्राओं को प्रोत्साहन राशि रू. 4,000 से 35,000/-तक, 10वीं अथवा 12वीं कक्षा की परीक्षा में मैरिट में प्रथम दस में स्थान प्राप्त करने वाले मेथावी बच्चों को रूपये 1 लाख की प्रोत्साहन राशि।
2	प्रसुति सहायता योजना	पुत्र जन्म पर 20,000 रू. एवं पुत्री जन्म पर 21,000 रू.।
3	हिताधिकारी की सामान्य अथवा दुर्घटना में मृत्यु या घायल होने के दशा में सहायता योजना।	दुर्घटना मृत्यु होने पर रू. 5.00 लाख तथा सामान्य मृत्यु होने पर रू. 2.00 लाख। पूर्ण स्थाई अपंगता होने पर रू. 3.00 लाख तथा आशिक स्थाई अपंगता होने पर रू. 1.00 लाख एवं घायल होने पर राशि रू. 5,000 से रू. 20,000 तक।
4	सिलिकोसिस पीड़ित हिताधिकारीयाँ हेतु सहायता योजना	सिलिकोसिस पीडितों को 3.00 लाख तथा मृतक आश्रितों को 2.00 लाख राज्य सरकार के निणयानुसार निदेशालय विशिष्ट योग्यजन विभाग के माध्यम से लाभान्वित।
5	निर्माण श्रमिक सुलभ्य आवास योजना	अधिकतम 1.50 लाख रू. तक अनुदान।
6	निर्माण भ्रमिक औजार/टूलिकट सहायता योजना	औजार/टूलिकट खरीदने पर 2000/- रूपये अथवा वास्तविक क्रय मूल्य, जो भी कम हो, का पुर्नभरण।
7	निर्माण श्रीमक जीवन व भविष्य सुरक्षा योजना	प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना की 50 प्रतिशत, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना की 100 प्रतिशत प्रीमियम राशि एवं अटल पेंशन योजना में रू. 1000 पेंशन के लिए देय अंशदान का 50 प्रतिशत राशि का मण्डल द्वारा पुनर्भरण।
8	निर्माण श्रमिकों के लिए व्यवसायिक ऋण पर ब्याज के पुर्नभरण योजना	हिताधिकारी को व्यवसाय हेतू वित्तिय संस्थाओं द्वारा अधिकतम 5 लाख रूपये तक स्वीकृत ऋण पर व्याज का पुनर्भरण।
9	निर्माण श्रमिक एवं उनके आश्रित यच्चों द्वारा भारतीय/ राजस्थान प्रशासनिक सेवा हेतु आयोजित प्रारम्भिक प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रोत्साहन योजना	भारतीय प्रशासनिक सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण करने पर रूपये 1,00,000/- राजस्थान प्रशासनिक सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण करेन पर रूपये 50,000/- रू.।
10	निर्माण श्रमिकों के विदेश में रोजगार हेतु वीजा पर होने वाले व्यय का पनर्भरण योजना	हिताधिकारी को विदेश में नियोजन के उद्देश्य से वीजा हेतु किए गए व्यय के पुनर्भरण हेतु मण्डल स्तर से अधिकतम रूपये 5000/- की राशि पुनर्भरण।

तो श्रमिक साथियों, मनरेगा में होने वाले कार्य निर्माण कार्यों में आते है, इसलिए अगर आप 100 दिन का कर्मकार कल्याण मंडल" में किसी भी श्रीमक को होगी | इस श्रीमक कार्ड के आधार पर आप "भवन रोजगार का हक प्राप्त कर लेते है तो आपके लिए अनेक "भवन और अन्य सित्रमीण कर्मकार कल्याण मंडल" की योजनाओं के द्वार खुल जायेंगे |

कार्यक्रम सहजकर्ता, वागुधारा

गणतन्त्र की सार्थकता

दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र के 73 वें गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ । इस पावन पवित्र अवसर पर तमाम देशवासियों का अभिनंदन और वंदन करते है। तन मन से, वंदन जन गण मन की अभिलाषा का अभिनंदन अपनी संस्कृति का, आराधना अपनी भाषा का । कहते है कि वैसे तो घड़िया जीवन में आती और जाती रहती है कुछ पल ऐसे होते है जिनको सदियाँ दोहराती रहती है। भारतीय गणतन्त्र का ये पल हम सबके लिए गौरव और गरिमा का पल है जिसे हम युगो युगो तक मनाते रहेंगे । आज सम्पूर्ण विश्व भारतीय गणतन्त्र का गुणगान करता है, सम्मान करता है और ये हमारे

लिए आदर की बात है। भारत का संविधान विश्व में सबसे बड़ा संविधान है। इस संविधान के जरिये नागरिकों को प्रजातान्त्रिक अधिकार सौंपे गए। संविधान देश में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की व्यवस्था तथा उनके अधिकारों और दायित्वों को सुनिश्चित करता है। संविधान के जरिये हमने अपने लोकतान्त्रिक अधिकार हासिल किये, अथार्त समस्त अधिकार जनता में निहित हुए, इसी दिन हमें अपने मौलिक अधिकार प्राप्त हुए और एक नए लोकतान्त्रिक देश का निर्माण हुआ। भारतीय संविधान का निर्माण एक संविधान सभा द्वारा किया गया। संविधान सभा में 296 सदस्य थे। 26 जनवरी 1950 को हमारे संविधान को लागू किये जाने के कारण हर वर्ष 26 जनवरी को हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। यह दिन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अनगिनत स्वतन्त्रता सेनानियों का सपना साकार हुआ। यह महत्वपूर्ण दिन हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन देश की राजधानी से लेकर गावं–ढाणी तक हम गणतंत्र का पर्व हर्षोल्लास से मनाते हैं। यह दिन पूरे देश में उत्साह और देशभिक्त की भावना के साथ मनाया जाता है। इस पावन पवित्र दिन पर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले योद्धाओं को नमन कर उनके बताये मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं। मातृभुमि के सम्मान एवं आजादी के लिये हजारों देशभक्तों ने अपने जीवन की आहूति दी थी। देशभक्तों की गाथाओं से हमारा कण कण गूँज रहा है।

देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों सपूतों ने भारत को आजादी दिलाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। ऐसे महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के कारण आज हमारा देश लोकतान्त्रिक गणराज्य हो सका है। गणतंत्र दिवस हमारी राष्ट्रीय एकता एवं भावना को और अधिक प्रगाढ़ बनाने के लिए देशवासियों को प्रेरित करता है। यह पर्व हमारे शहीदों की अमर गाथाओं से हमें गौरवान्वित करता है और प्रेरणा देता है कि अपने देश के गौरव को बनाए रखने के लिए हम संकल्पित हैं तथा हर पल तेजी से प्रगति और विकास की ओर बढ़ रहे हैं। गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व देशभर में अपार उत्साह तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन झंडारोहण किया जाता है तथा प्रभात फेरियां निकाली जाती हैं। देश



की राजधानी दिल्ली सहित सभी प्रान्तों तथा विदेशों के भारतीय राजदूतावासों में भी यह पर्व उल्लास व गर्व से मनाया जाता है। हमारे सुरक्षा प्रहरी परेड निकाल कर, अपनी आधुनिक सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। सेना की परेड के बाद रंगारंग सांस्कृतिक परेड होती है। विभिन्न राज्यों से आई झांकियों के रूप में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया जाता है। प्रत्येक राज्य अपने अनोखे त्यौहारों, ऐतिहासिक स्थलों और कला का प्रदर्शन करते हैं। यह प्रदर्शनी भारत की संस्कृति की विविधता और समृद्धि को एक त्यौहार का रंग देती है।

हमें अपने पूर्वजों के द्वारा किये गए अनमोल बलिदानों को बेकार नहीं जाने देना चाहिए और फिर से देश को भ्रष्टाचार, अशिक्षा, असमानता और दूसरे सामाजिक भेदभाव का गुलाम नहीं बनने देना है. हमें अपने देश के वास्तविक प्रगति के प्रति जागरूक रहना चाहिए, तो इसके नियमित उत्थान,

प्रतिष्ठा और राष्ट्रीय चरित्र के प्रति भी उतना ही सजग रहना चाहिए, भावी पीढ़ी का भविष्य संवारने के लिए पहले खुद को सुधारना होगा। भ्रष्टाचार के विरूद्ध शंखनाद करना होगा। आदर्श समाज की स्थापना तभी होगी जब हम इसकी शुरूआत अपने घर से करेंगे। समाज की एकजुटता और अच्छे कार्य के लिए एकता का संदेश जन-जन तक पहुँचा कर हम आदर्श राज्य और समाज की स्थापना में भागीदार हो सकते हैं। गणतंत्र की सार्थकता तभी होगी जब हरेक व्यक्ति को काम व भरपेट भोजन मिले। गणतंत्र की सफलता हमारी एकजुटता और स्वतंत्रता सेनानियों की भावना के अनुरूप देश के नव निर्माण में निहित है। देश और समाज के निर्माण के लिए, देश की प्रगति और विकास की ओर हमें तेजी से बढ़ने के लिए संकल्पित होना पड़ेगा। पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से चहुंमुखी विकास की ओर कदम बढ़ाने पड़ेंगे । सामाजिक क्रांति का बीड़ा उठाकर ईमानदारी के मार्ग पर चलने की

कोशिश करनी पड़ेगी । यह सब इसलिए क्यूँ कि सत्यमेव जयते से हमने किनारा कर लिया है। अच्छाई का स्थान बुराई ने ले लिया है और नैतिकता पर अनैतिकता प्रतिस्थापित हो गई है। ईमानदारी केवल कागजों में सिमट गई है और भ्रष्टाचरण से पूरा समाज आच्छादित हो गया है । ऐसा नहीं है कि सब तरफ निराशा ही निराशा है आजादी के बाद निश्चय ही देश ने प्रगति और विकास के नये सोपान तय किये हैं। पोस्टकार्ड का स्थान ई-मेल ने ले लिया है। इन्टरनेट से दुनिया नजदीक आ गई है। मगर आपसी सद्भाव, भाईचारा, प्रेम, सच्चाई से हम कोसों दूर चले गये हैं। समाज में बुराई ने मजबूती से अपने पैर जमा लिये हैं। लोक कल्याण की बातें गौण हो गई हैं।

जिस प्रकार हम अपने परिवार कि सुरक्षा, स्वाभिमान, पालन पोषण और उसके प्रत्येक भले बुरे के लिए जिम्मेदार है, ठीक उसी प्रकार देश कि सुरक्षा, संप्रभुता, अस्मिता, गरिमा, एकता और अखंडता के लिए भी हम उत्तरदायी है। यदि हम अपने समाज और देश के प्रति अपने दायित्वों का प्रतिबद्धता के साथ कुशलतापूर्वक निर्वहन करते है तो यही सही मायने में गणतंत्र के प्रति हमारी सच्ची,पवित्र और विनम्र भावना है।

भारतीय जन जीवन एवं शासन से जुडे प्रत्येक व्यक्तित्व का परम कर्तव्य है कि वे संविधान एवं गणतंत्रात्मक व्यवस्था की अपेक्षाएं प्रतिस्थापित करने की दिशा में लोगों को जागृत करें एवं 'संविधान' के वास्तविक उद्देश्यों से उन्हें अवगत करायें, तभी गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय महापर्व की सार्थकता सिध्द होगी एवं जन-जन संविधान गणतंत्रात्मक व्यवस्था का हृदय से सम्मान करने लगेगा। हमे इस बात को सुनिश्चित करना पड़ेगा कि देश है तो हम सब है यदि देश का स्वाभिमान, गौरव और उसकी अस्मिता दांव पर लगी है तो ऐसी स्थिति में हमे जी जान से उसे बचाने में अपने को तैयार रखना पड़ेगा। जिस देश का नागरिक देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझता है और उसके निर्वहन के लिए सदैव तत्पर रहता है उस देश पर कभी संकट नहीं आ सकते है । कहते है कि जागरूक जनता किसी भी देश और समाज की सबसे बड़ी पूंजी होती है। भारतवर्ष का अतीत वर्तमान से गौरवशाली था । परंतु ये बात भी सत्य है कि अतीत कि पूंजी के सहारे वर्तमान को नहीं जिया जा सकता है। हमें अपने अतीत से सीखकर वर्तमान को संवारना है। हमारे अतीत के नींव पर वर्तमान खड़ा है और वर्तमान की सफलता पर भविष्य की परिकल्पना । इसलिए यह परमावश्यक है कि हमें जागरूक और प्रतिबद्ध नागरिक होने का फर्ज अदा करना है। संविधान के रूप में जो अनुपम सौगात हम भारतवासियों को प्राप्त हुई है उसे सच्चे मन से अंगीकार करना है । न केवल अंगीकार करना है वरन पूरी समर्पण भावना के साथ उसके प्रति अपने कर्तव्यो का पालन करना है । यदि हम ऐसा कर पाते है तो ये हमारे देश और उसके गणतन्त्र की सच्ची सेवा है ।

सतीश आचार्य





सच्चा बचपन - कोविड के कारण बच्चों की शिक्षा पर असर

प्रिय पाठको सभी को जय गुरु और नव वर्ष की ढ़ेरो शुभकामनाएं ! वर्तमान में महामारी,पलायन और बेरोजगारी के कारण परिवार में आर्थिक तंगी । बनाने के लिए हर स्तर पर मदद करें। पिछले अंक में हमने पढ़ा था की बच्चों के प्रति संवेदनशीलता की जरुरत क्यों है और बच्चों को एक अच्छा वातावरण प्रदान करने में परिवार, विद्यालय, समुदाय व सरकार की क्या भूमिका है जिसमें बच्चे स्वयं को सहज महसूस करें I इस माह के अंक में हम बात करेंगे की विगत 2 वर्षों से किस प्रकार कोरोना महामारी ने पलायन को बढ़ावा दिया है और उससे बच्चों की शिक्षा पर किस प्रकार असर हुआ है, साथ ही बच्चों की शिक्षा को लेकर उनको अवसर और माहौल देने में अलग-अलग स्तर पर क्या क्या भूमिका बनती हैं I

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में सामृहिकता के साथ, एक दूसरे के साथ मिलकर सामाजिक क्रियाकलाप करते हुए विकास करता है । कोविड-19 वैश्विक महामारी के शुरुआती चरण में तालाबंदी ने मानवीय जनजीवन को अत्यधिक रूप से प्रभावित किया है । तालाबंदी से लोगों में सामाजिक और शारीरिक दूरियाँ बढ़ गईं। गरीब, खेतीहर, प्रवासी मजदूर, दैनिक कामगार के आजीविका के साधन बंद हो गए । समाज का हर तबका घरों में रहने को मजबूर था । ऐसे में वे दैनिक कामगार जो अपने घरों से दूर थे, अपने घरों की ओर लौटने को मजबूर थे और तालाबंदी के कारण जो नहीं लौट पाए उनके लिए वहां रहकर उपलब्ध संसाधनों के साथ अपने जीवन को बचाए रखना एक बहुत बड़ा संघर्ष हो गया था । ऐसे सभी ग्रामीण दैनिक कामगार जो अपने जीवन-यापन करने जैसे-मजदूरी, खेती, रिक्शा चलाना, भवन निर्माण कार्य आदि के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं, वे सभी अपनी दैनिक जरूरतों को पूरी करने की जद्दोजहद में अपना जीवन जी रहे होते हैं। अर्थात इनके खुद के लिए और परिवार के लिए दो समय के भोजन की व्यवस्था हो पाना तभी संभव हो पाता है जब ये दैनिक रूप से मजदूरी कर और पैसा कमा सके । सभी मजदूरों को लौटकर अपने घरों को आना पड़ा और बेरोजगारी वश घरों में कैद होकर रह जाना पड़ा। महामारी के दौरान जब सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं वरन विश्व स्तर पर तालाबंदी हो गयी थी तब दुनिया का प्रत्येक क्षेत्र और समाज का हर तबका नकारात्मकता के दौर से गुजर रहा था जिसके असर अभी भी देखे जा सकते हैं ।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि तालाबंदी के कारण पलायन और बेरोजगारी भी बढ़ी है इसका सीधा असर बच्चों की शिक्षा पर देखने को मिल रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में निजी विद्यालय छोडकर बच्चों का नामांकन सरकारी विद्यालयों में करवाया जा रहा है और इस तरह से सरकारी विद्यालयों में बच्चों की संख्या बढ़ गयी है सरकार की इस स्थिति से बाहर आने के लिए कोई भी पूर्व तैयारी नहीं है इस तरह से शिक्षकों के पास भी दिशा का अभाव है कि बच्चों के साथ क्या और कैसे काम किये जाने की जरूरत है।

बच्चों की शिक्षा पर असर

विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों में विभिन्न भौगोलिक एवं जलवायु कारणों के चलते पहले से ही यहाँ का जनसमुदाय कई तरह की वंचनाओं का सामना करते हुए हाशिये पर जीवन जी रहा है और महामारी के समय तो यह वर्ग दोहरी चुनौतियों के सामने खड़ा था । महामारी और पलायन का सीधा असर जनजातीय क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा पर भी देखने को मिला है । महामारी और तालाबंदी के कारण सभी विद्यालयों एवं आंगनवाडी केन्द्रों के बंद होने से शिक्षा, खेल-कूद, पोषाहार व्यवस्था पूरी तरह से बाधित हो गयी। पहले से ही इन क्षेत्रों में बच्चों में कुपोषण का प्रसार अधिक है एवं महामारी के चलते, बेरोजगारी में वृद्धि, पलायन एवं परिवारों में उत्पन्न हुई खाद्य एवं पोषण असुरक्षा के कारण बच्चों का खान-पान ठीक से नहीं हो पाया और बच्चों में कुपोषण का स्तर अधिक बढ़ने की पूर्ण संभावना बन गयी।

महामारी और तालाबंदी के कारण विद्यालय पूरी तरह से बंद थे, ऑनलाइन शिक्षा सब बच्चों तक पहुँच सके ऐसी सुविधाएँ आदिवासी/जनजातीय क्षेत्रों में संभव नहीं हो पा रही थी और बच्चों का शिक्षा से जुड़ाव पूरी तरह से टूट गया था I परिणामस्वरूप बच्चों ने सीखने-सिखाने से सम्बन्धित बडे नकसान उठाये हैं। एक वर्ष से भी अधिक समय तक शिक्षा से अलग-थलग रहे बच्चे नया कुछ तो सीख ही नहीं सके वरन पहले से सीखी हुई अवधारणाओं जैसे-पढ़ना, लिखना, गणितीय अवधारणाओं में जोड़, घंटाव जैसी आधारभूत अवधारणायें, जिनमें बच्चों ने महारत हासिल कर रखी थी, को भी भूल गए । तालाबंदी के लम्बे अंतराल के कारण ये नुकसान मात्र शैक्षणिक ही नहीं बल्कि बच्चों के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित भी थे। बच्चों का घरों से बाहर निकलना बंद था अतः अन्य बच्चों के साथ मिलकर खेलकुद और मनोरंजन की सामूहिक गतिविधियाँ पूरी तरह से बंद हो गयी थीं, बच्चे घरों में रहकर सीमित दिनचर्या बिताने, एकाकी जीवन जीने एवं हम उम्र साथियों के साथ समय नहीं बिता पाने के कारण मानसिक और शारीरिक रूप से नकारात्मक असर झेल रहे थे। इस तरह से देखा जाए तो बच्चों को अपने जीवन में गंभीर नुकसानों का सामना करना पड़ा है।

का सामना करना पड़ रहा है और बाल श्रम और बाल विवाह को बढ़ावा मिल रहा है। गरीबी इन सबके मूल में काम कर रही है।

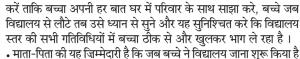
बच्चों की शिक्षा को लेकर उनको बेहतर माहौल देने में प्रत्येक स्तर की भूमिका

1. परिवार की भूमिका

• महामारी के बाद अब जब मानव जीवन फिर से व्यवस्थित होने की ओर है और सभी शैक्षणिक संस्थान फिर से पर्ववत काम करने को तैयार है तो परिवार

• तालाबंदी, पलायन के कारण बच्चों का विद्यालय जाना बंद हो गया था अब वापस सभी बच्चों को शिक्षा से जोड़ते हुए विद्यालय भेजना सुनिश्चित करें । • बच्चों ने पिछले लगभग 2 वर्ष का दुसाध्य समय घरों में कैद होकर बिताया है, बच्चे डरें नहीं अब समय है कि बच्चों का फिर से विद्यालयों में जाना सनिश्चित किया जाए । परिवार की जिम्मेदारी बनती है कि बच्चों को विद्यालय जाने के लिए प्रेरित करे, परिवार, समाज और रिश्तेदारों द्वारा बच्चों के साथ प्यार से व्यवहार किया जाए, छोटी-छोटी बातों पर बच्चों की प्रशंसा करें ।





तो उसके शिक्षक के साथ सतत रूप से बातचीत करते रहें और बच्चे को किसी भी तरह की समस्या आ रही है तो शिक्षक के साथ खुलकर बातचीत करे । • संभव है कि पलायन के बाद बच्चे के लिए नया माहौल और नया विद्यालय हो तो बच्चे को नए माहौल में ठीक से जुड़पाने में मदद मिल सके ऐसा भी ध्यान रखा जाना ज़रूरी है ।

2. समुदाय की भूमिका

• एक लम्बे अंतराल के बाद जब विद्यालय बच्चों के लिए वापस से चालू हुए हैं ऐसे में समदाय की विशेष जिम्मेदारी बन जाती है कि अपने आस-पास के सभी बच्चों को विद्यालय तक पंहुच सकने में मदद करे।

• समुदाय स्तर पर ऐसा माहौल बनाये जाने की जरूरत है कि बच्चों के लिए विद्यालय तक पहुंचना आसान हो सके साथ ही समुदाय द्वारा ग्रामीण स्तर पर सिखाई जा सके ऐसी चीजों को लेकर बच्चे और विद्यालय के बीच में एक कड़ी का काम किये जाने की जरूरत है।

• समुदाय के सदस्यों को आगे आकर विद्यालयों के साथ बच्चों के सीखने-सिखाने की चर्चाएँ किये जाने की जरूरत है, जब एक लम्बे अंतराल के बाद शैक्षणिक संस्थान शुरू हुए हैं तो यह जरूरी बन जाता है कि समुदाय विद्यालय स्तर पर समय-समय पर मिलता रहे और बच्चों और विद्यालयों को आ रही किसी भी तरह की समस्याओं को निपटाने में मदद करे।

• बच्चों के भावनात्मक स्तर का ख़ास ख्याल रखने की वर्तमान में विशेष जरूरत है, ताकि बच्चा ठीक से विद्यालय व शिक्षा से जुड़ाव महसूस करने लगे और किसी भी तरह की बाध्यता बच्चों के विकास में ना आये और इसके लिए समुदाय को जागरूकता और सिक्रयता के साथ अपनी भूमिका निभाने की जरूरत है।

3. सरकार की भूमिका

• लगभग 2 वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद अब जब विद्यालय बच्चों के लिए खुल गए हैं तो इस अन्तराल को ख़त्म करने के लिए बच्चों के साथ मूलभूत अवधारणाओं पर काम किये जाने और उसके आधार पर जो पूरे अकार्दिमिक वर्ष का नुकसान हुआ है उससे सम्बन्धित भी काम करे और उसके बाद नई अवधारणा सिखाने की तरफ बढे जाने की जरूरत है।

• सभी विषयों पर बच्चों के साथ उम्र और कक्षा के स्तर के अनुरूप अवधारणाओं पर सीखने-सिखाने के काम किये जाने की बजाय सिरे से काम किये जाने की

• इसके लिए सरकार शिक्षकों के लिए कुछ इस तरह के प्रशिक्षण का प्रबंध करे जिसमे शिक्षक यह समझ बना सके कि अलग-अलग सीखने के स्तर के बच्चों के साथ किस तरह से और किन महत्वपूर्ण चरणों के तहत काम किये जाने

• बच्चों को सीखने-सिखाने के तरीके किस तरह से आसानी लिए हुए हो सकते हैं, बच्चों के मूल्यांकन का तरीका क्या हो सकता है और अन्तराल विभाजन की क्या-क्या रणनीतियाँ हो सकती हैं।

• शिक्षक को विशेष रूप से यह ध्यान रखने की जरूरत है कि बच्चों को जल्दबाजी में अगली कक्षा में बढ़ाने की बजाय उनकी क्षमता और सीखने की गति के अनुसार पर्याप्त समय और अवसर मिल सके ताकि बच्चों को मूलभूत क्षमताएं हासिल करते हुए आगे बढ़ने में मदद मिल सके । इसके लिए कुछ ब्रिज कोर्स, समुदाय आधारित जुड़ाव बढ़ाने, सीखने-सिखाने के तरीकों में बदलाव करते हुए कुछ इस प्रकार की गतिविधियाँ शामिल की जा सकती हैं जिससे बच्चों को शाला-स्तर पर काम करते हुए आधारभूत क्षमताओं को

• सरकार को इस प्रकार से काम किये जाने की जरूरत है कि बच्चों के सीखने सिखाने के प्रत्येक स्तर पर जो अंतराल बन गए हैं उनको आसान और तनाव रहित तरीकों से खत्म किया जा सके और बच्चों को मानसिक संबल मिल सके ताकि वे खुशहाल तरीके से आगे बढ़ सकें।

महामारी, तालाबंदी या पलायन समस्या कोई भी बड़ी नहीं हो सकती अगर कोशिश साझे रूप से की गयी हो । अर्थात समुदाय, परिवार और सरकार संयुक्त रूप से मिलकर एक दिशा में प्रयास करे तो बच्चों ने पिछले समय में जो नुकसान उठाये हैं उन्हें जल्द ही समायोजित कर लिया जायेगा जो कि बच्चों को एक खुशहाल जीवन जीने की ओर दिशा प्रदान करेगा ।

> मध् सिंह, सच्चा बचपन-एडवोकेसी लीडर माजिद खान, सच्चा बचपन-कार्यक्रम प्रभारी





कोविड- 19 महामारी के दौरान भी 578 बालक-बालिकाओं को मिला चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 वाग्धारा का साथ, अनेक प्रकार की समस्याओं के बावजूद भी बांसवाड़ा जिले में चाइल्ड लाइन ने निभाई महत्वपूर्ण भुमिका

आज जिले में चाइल्ड लाइन 1098 के महत्वपूर्ण प्रयासो एवं अनेको परिवारों को सहयोग कर सराहनीय कार्य किया है। जिस पर जिला समन्वयक परमेश पाटीदार ने बताया कि चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 की शरुआत अप्रैल 2015 से बांसवाड़ा जिले में वाग्धारा संस्थान के माध्यम से हुई । शुरुआत के दिनों में चाइल्ड लाइन पर प्रतिमाह 8 से 10 केस प्राप्त होते थे क्योंकि इस क्षेत्र में चाइल्ड लाइन 1098 का प्रचार प्रसार कम था । फिर चाइल्ड लाइन की टीम ने दिन रात मेहनत करते हुए जनसमुदाय में इसका प्रचार प्रसार किया। प्रचार प्रसार का असर यह हुआ कि दिन-ब-दिन केसों की संख्या बढ़ती गई लोगों को लाभ भी होता गया, सरकार की योजनाओं को परिवारो तक पहुंचने में 1098 सम्पर्क का रास्ता बना । प्रशासन के सहयोग से अनेक लोगों को एवं बालक बालिकाओं को लाभ पहुँचा । टीम में सबसे वरिष्ठ नरेश पाटीदार जिनके अनुभव एवं उनके प्रयासों की जितनी भी सराहना की जाए उतनी कम है , उनके मार्गदर्शन एवं उनके अनुभव को लेकर भी टीम ने अनेकों कामयाबी हासिल की है समय-समय पर जो केस प्राप्त होते थे चाहे वह रात हो या दिन टीम के सदस्य मुस्तैद होकर उस परिवार को मदद देकर अपनी जिम्मेदारी पूरी वहन करते थें । टीम में शोभा सोनी कई वर्षों से कार्यरत हैं सबसे पहले शोभा सोनी के द्वारा वाग्धारा संस्था परिवार में "आपडू स्वास्थ्य आपड़े हाथ" जिसमें परिवार के जो बालक बालिकायें अति कुपोषित एवं कुपोषित थी उनके बारे में कार्य किया एवं कुपोषण को खत्म करने में महत्वपूर्ण कार्य किए गए । आज टीम में जब इनका साथ मिला तो 9 सदस्यों की पूरी टीम तल्लीनता के साथ लोगों की समस्याएं दुर कर रही है और ऐसे मे त्वरित कार्य करते हुए गंतव्य स्थान तक जाकर समस्त लोगों को लाभ दिलाने की पुरी कोशिश करते हुए सहयोग प्रदान करती है । बासुड़ा कटारा ने जो जिले में जनजातीय समुदाय के लिए प्रयास संस्था के माध्यम से किए है वह शायद ही कोई कर पाए, क्योंकि वह जिस क्षेत्र से आते है उस क्षेत्र में आज भी अशिक्षा, गरीबी और जागरुकता की कमी है । फिर भी उन्होने लोगो को जागरुक करते हुए क्षेत्र में जनसमुदाय को लाभाविन्त किया है । जिस पर प्रशासन के द्वारा दो बार उपखंड स्तर पर सम्मानित किया गया है साथ ही साथ सज्जनगढ़ ब्लॉक एवं कुशलगढ़ ब्लॉक में इनके द्वारा अपने स्वयंसेवको एवं सूचनाकर्ताओं के माध्यम से पालनहार, विधवा पेंशन से समुदाय को जोडकर उपलब्धि हासिल की है। इसी प्रकार सभी सदस्यों का महत्वपूर्ण सहयोग है ।

हम बात करना चाहते हैं तो टीम के पास बाल विवाह, बालश्रम, बाल शोषण, पालनहार, निराश्रित, गुमशुदा, भिक्षावृत्ति में लिप्त अनेको बालक बालिकाओं के केस प्राप्त होते हैं टीम सदस्यों ने कभी हिम्मत नहीं हारी एवं अनेकों अनेक बालक बालिकाओं को सरकार की समस्त योजनाओं से जोड़कर को लाभान्त्रित किया है इस कीर्तिमान में टीम के पास जिले के बाहर या राज्य से बाहर भी कोई घटना या जानकारी प्राप्त होने पर टीम के द्वारा त्वरित कदम उठाकर बालक बालिकाओं को लाभ दिलाने का प्रयास किया जाता है । हमने लॉकडाउन कोविड-19 में देखा है कि चाइल्ड लाइन

के माध्यम से अनेकों बालक बालिकाओं को खाद्यात्र योजना से जोड़ा गया है 🛮 जिसके लिए हमें कई लड़ाई लड़नी है क्योंकि हमारा जिला जनजाति क्षेत्र है लॉकडाउन में जिन परिवारों को घर जाने में समस्या हो रही थी उनको भी टीम के द्वारा अपने राज्य एवं अपने जिले के गंतव्य स्थान तक प्रशासन के सहयोग से छोड़ा गया है । हम बताना चाहते हैं परिवार में विषम या आर्थिक स्थिति के कारण जिन बालक बालिकाओं ने पढ़ना छोड़ दिया था टीम के माध्यम से उन को शिक्षा की मुख्य डगर से जोडा गया है । जिनको ऑपरेशन एवं चिकित्सा सहायता कि आवश्यकता थी उनको भी सहयोग देकर सहारा दिया है। आज यह समस्त खुशियां इन परिवारों में टीम की कामयाबी एवं टीम के हौसले से हो पाई है टीम सदस्यों ने बताया कि हमारे आदर्श एवं प्रेरणा स्त्रोत संस्था सचिव जयेश जोशी जो रात दिन एक करते हुए जनजातीय समुदाय के लिए सदैव तत्पर रहकर कार्य कर रहे है । उन्हीं की प्रेरणा से आज यह मकाम हासिल किया है और हमारे अंदर यह प्रेरणा जगाई है कि जज्बा हमारे दिल में हो तो पत्थर तोडकर भी पानी निकाला जा सकता है । हम सबने ठाना है बांसवाड़ा जिले को बालिमत्र बनाना है । जिससे की जिले को बाल विवाह, बालश्रम एवं बाल यौन शोषण से मुक्त जिला घोषित करने में

आज भी हमारे जिले में पलायन की बहुत बड़ी समस्या है, आज भी हमारे क्षेत्र में शिक्षा का स्तर बहुत कम है, आज भी ऐसे कई बालक बालिका है जो शिक्षा से वंचित है इसीलिए बालश्रम करने के लिए दसरे राज्यों में जाते है। फिर भी हमारा एक ही लक्ष्य है सभी को सरकार की समस्त जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ देते हुए उन को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ते हुए उनके कार्यों का निष्पादन निस्वार्थ भाव से करना ही परम उद्देश्य है । कोविड-19 के दौरान चाइल्ड लाइन 1098 की टीम को 17 ऐसे परिवार की जानकारी प्राप्त हुई की उन परिवारों के समस्त बालक बालिकाओं के माता या पिता कि मृत्य होने पर मुख्यमंत्री राहत कोष की राशि नहीं मिल पा रही है जिस पर टीम ने जिला प्रशासन को अवगत करवाते हुए उन समस्त परिवारों के दस्तावेज तैयार कर सहायता राशि दिलवाने में मदद की एवं पालनहार जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं से जोड़ा है । बाल श्रम के विरुद्ध अभियान चलाते हुए टीम ने जिले में मनरेगा में जो बालश्रम चल रहा था उसको रोकने में भी प्रशासन के सहयोग से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । बड़े स्तर पर बालश्रम



लगाने एवं इस प्रकार की संलिप्तता पाए जाने पर संबंधित कार्मिकों के विरुद्ध कार्यवाही के निर्देश दिए गए है । टीम को जब यह जानकारी पहुंची कि इस क्षेत्र में भोले-भाले गरीब आदिवासियों पर इस प्रकार के अत्याचार हो रहे है की जिसमें निजी कम्पनियों के द्वारा कुछ राशि देकर इनको चंगुल मे फंसा कर कई वर्षों तक इनसे राशि वसूल करते रहे। थोडे से पैसों कौ लालच में आकर ये लोग बहुत बडे धोखे में आ जाते थे निजी कार्मिक पैसे वसूल करने के लिए दिन रात इन लोगो को परेशान करते थे कई बार ऐसी परिस्तिथियाँ बनती थी की ये लोग घर छोड़ कर कही चले जाते थे। अनेकों कंपनियां थी जो घर घर जाकर आधार कार्ड एवं जन आधार के माध्यम से उनको लोन देने का लालच देती थी एवं लोगो को फंसा लेती थी जिस पर टीम के माध्यम से प्रतापगढ जिले में मुकदमे दर्ज करवाए गए जिसमे निजी कंपनियों ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए स्थानीय थानों में शपथ पत्र दिया की अब आगे से किसी भी अनैतिक रूप से लोगो को परेशान नहीं किया जायेगा तो इस तरह सतर्कता एवं सिक्रयता के माध्यम से कामयाबी हासिल हुई है ।

आज भी अनेकों जातियों में बाल विवाह की प्रथा है परंतु अब बाल विवाह के केस बिल्कुल बांसवाडा जिले में बहुत कम आते हैं टीम में कमलेश बुनकर, कान्तिलाल यादव, दिनेश निनामा एवं गोपाल सुथार इन सभी ने भी एक स्वर में कहा है कि बांसवाड़ा जिला बाल श्रम मुक्त जिला होगा जिसके लिए हमने जो भी कार्य किए है उसमें प्रशासन का महत्वपूर्ण सहयोग मिला है। कुपोषण की समस्या से निजात दिलाने के लिए प्रशासन के सहयोग से वागुधारा संस्था द्वारा एक अभियान चलाया गया था उस अभियान से कामयाबी यह हुई कि जिले में 1098 पर अति कुपोषित एवं कुपोषित बालकों की संख्या कम आने लगी है । आंगनवाड़ी केंद्रों पर जागरूकता बढ़ी है, अभिभावक अपने बच्चों की जांच एवं बच्चों की स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने लगे हैं। टीम में कमलेश बुनकर के द्वारा बताया गया कि कुशलगढ़ सज्जनगढ़ आनंदपुरी एवं घाटोल में अभियान के दौरान बालक बालिकाओं को छात्रवृत्ति से भी जोड़ा गया है जिससे कोई भी बालक बालिका छात्रवृति से वंचित न हो, जिसमें शिक्षा विभाग के सहयोग से जिले के समस्त राजकीय एवं निजी विद्यालयों में सुझाव पेटिका लगाई गई । इन सब के सहयोग से एवं सतर्कता से टीम के कार्यों को देखते हुए प्रशासन के द्वारा इतने कम समय में दो बार जिला स्तर पर एवं सात बार उपखंड स्तर पर सम्मानित किया गया है ऐसे ही जिला स्तरीय कार्यक्रमों में भागीदारी को देखते अनेक कार्यक्रमो में भी समय-समय पर सम्मानित किया गया है । इस प्रकार हमारे पास जो भी केस आये है उसमें टीम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने मुकाम तक पहंची है एवं बालक बालिकाओं को किसी न किसी प्रकार से लाभ देते हुए उसे सहयोग प्रदान किया है जिसमें प्रशासन का अनुकरणीय सहयोग मिला है शपथ लेते हैं कि बांसवाड़ा जिले में कोई भी बालक बालिका किसी भी प्रकार कि समस्या से ग्रसित न हो, कोई बालक शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा और टीम आगामी दिनों में नवचेतना, नव संचार एवं नई ऊर्जा के साथ में काम करते हुए जिले में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।



जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

राजस्थान तारबंदी योजना की जानकारी

तारबंदी योजना │ **योजना का उद्देश्य**ः- इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानो की आर्थिक मदद करना है, तथा अपने खेत मे ज्यादा से ज्यादा फसल का उत्पादन कर सके । इससे किसानो के खेतो मे आवारा पशुओ का खतरा कम होगा और फसल अच्छी होगी । अगर फसल अच्छी होगी तो पैदावार भी अच्छी होगी, इससे उन किसानो का सबसे अधिक लाभ होगा जो पहले अपने खेत मे तारबंदी करने मे असमर्थ थे । किसानो के खेतो मे आवारा पशुओ और अन्य जानवरो के कारण फसल का नुकसान होने पर वह निराश हो जाता है । लेकिन इस योजना का लाभ लेकर फसलो को बचाया जा सकता है।

योजना से मिलने वाले लाभ • बहुत से किसान अपने खेत मे तारबंदी करने में समर्थ नहीं होते हैं । • इस योजना से छोटे किसानों को अधिक लाभ मिलेगा क्योंकि खेत की तारबंदी मे आने वाले खर्च का 50% तक सरकारी योजना के तहत देय है।

 किसानो की पैदावार मे वृद्धि होगी एवं लगने वाले तारो का खर्च उठाने में सहायता मिलेगी । • किसान अपने खेत से प्रत्येक मौसम में चाहे जो फसल का उत्पादन कर सकता है । • योजना के तहत 40 हजार रूपये तक का खर्च हर किसान के खेत की तारबंदी हेतु किया जाता है । किसान को केवल 400 मि. तक की तारबंदी के लिए ही अनुदान राशि का लाभ दिया जाएगा । • किसान की फसल का नुकसान जंगली जानवरों के कारण होता है उससे छुटकारा मिल जाएगा और उसे अधिक फसल का उत्पादन होगा । • किसानों की आर्थिक हालत में सुधार आएगा । योजना हेतु पात्रता • आवेदक राजस्थान का स्थायी नागरिक (निवासी) होना चाहिए। • लाभार्थी के पास कम से कम 0.5 हेक्टेयर भूमि होनी चाहिए। •योजना के लिए 40 हजार रुपए तक की अनुदान राशि प्राप्त करना है तो न्यूनतम 50% अंशदान जमा करना होगा । • योजना का लाभ प्रत्येक किसान को एक ही बार मिलेगा । • योजना का लाभ लेने के लिए उसके खुद के नाम से बैंक में खाता होना अति आवश्यक है तभी वह इस योजना का लाभ ले पायेगा । • लाभ लेने वाले किसान के पास खुद की कृषि योग्य भूमि होनी चाहिए

। आवश्यक दस्तावेजः- राजस्थान तारबंदी योजना के तहत आवश्यक दस्तावेजों की सूची :- • राशन कार्ड • आधार कार्ड • जमीन की जमाबंदी • बैंक खाता संख्या • पासपोर्ट साइज फोटो • फ़ोन नंबर • खेत का नक्शा (किसान के खेत का) • वोटर आईडी कार्ड • आय प्रमाण पत्र **आवेदन की प्रक्रिया**:- आवेदन ऑफलाइन एवं ऑनलाइन दोनों ही प्रकार से स्वीकार किया जायेगा है । ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया:- • आवेदन अपने नजदीकी सुविधा केंद्र मे कर सकते है इस योजना का आवेदन फॉर्म भरना होता है और उस फॉर्म के साथ योजना मे मांगे गए दस्तावेज लगाने होते है । • आपका आवेदन पूरा हो जाने की जानकारी मोबाइल नंबर पर दे दी जाती है फॉर्म भरते हुये आपको एक बात का ध्यान रखना होगा की जो नंबर आप इस फॉर्म मे देतें वो सही होना चाहिये। • फोन नंबर पर आपको इस योजना की कॉल आएगी उसके बाद आपकी रिपोर्ट अधिकारयों को दे दी जाती है और प्रक्रिया पूरी होने के बाद आपके खाते मे पैसे आ जाते है । • ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया :- • http://www. agriculture.rajasthan.gov.in पर जाना होता है

• इस योजना की अधिकारिक वेबसाइट को ओपन करेंगे आपके सामने इसका मुख्य पृष्ठ खुल जाएगा । राजस्थान राज्य के किसी भी किसान को इस योजना का लाभ लेने में किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और किसान को इस योजना से सम्बन्धित कोई भी जानकारी पूछने के लिए परेशान न होना पड़े इसके लिए राजस्थान सरकार की तरफ से इसके हेल्पलाइन नंबर जारी किये गये है जिसके माध्यम से जानकारी घर बैठे ही जान सकते है इसके लिए आपको सरकारी दफ्तर नही जाना होगा ।

हेल्प नंबर :- 141-2227849, 9414287733

सभी पाठको को जय गुरु अने नवा साल नी राम राम

जनजातीय स्वराज संगठन हिरन के सभी कर्मठ स्वराज साथीयों व पाठको को जय गुरु !! जैसा की हम सभी को विदित है पिछला साल हम सभी के लिए अति चुनोतीपूर्ण रहा । हमने इस कोरोना काल में अपनो को खोने का दर्द झेला है तो कई लोगों ने स्वास्थ्य सम्बंधित कष्ट उठाया और लगता है आने वाला साल 2022 भी इसी प्रकार जाने वाला है क्युंकि कोरोना का नया रूप ओमिक्रोंन नामक वेरिएंट हमारे देश में एवं प्रदेश में आ चूका है , कभी भी हमारे बीच दस्तक दे सकता है । आज तक चिकित्सा विज्ञान एवं वैज्ञानिक भी कोरोना के बारे में पूरी तरह नहीं जान पाए है वही हमारा इलाज कर रहे है यह बड़ी ही विडम्बना है। अतः इससे बचने का मूलमंत्र है ख़ुद बचे और दूसरों को सुरक्षित रहने दे । ज्यादा भीड़ भाड़ वाली जगह पर जाने से बचे । यदि अति आवश्यक हो तो ही यात्रा करे, मास्क का उपयोग करे , समय समय पर हाथ धोये , स्वछता का पालन करे ।"समस्त जन से निवेदन है अपना ध्यान खुद रखे, सतर्कता बरते, खुद बचे और दूसरों को बचाए" । वर्तमान में सभी किसान भाइयों ने खरीफ फसल को सहेज लिया है एवं रबी की फसल में सिंचाई चल रही है । समय समय पर मावठ हो रहा है इससे लगता है कि खरीफ की तरह रबी में भी बम्पर पैदावार होने के आसार है।

सच्चा स्वराज: - सच्चा स्वराज के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवों के 356 ग्राम विकास बाल अधिकार सिमिति की बैठक हुई । बैठक में ग्राम चोपाल के अंतर्गत पूर्व बनाये गए प्लान का फ़ॉलोअप लिया गया, साथ ही नई योजना बनाने पर चर्चा हुई , नई रणनीति बनाई गई । स्थानीय मुद्दों को परम्परागत तौर पर समाधान किया एवं जटिल मुद्दों को पेरवी के लिए आगे ले जाया गया । इकाई में श्रमिको को योजनायों से जोड़कर लाभ दिलाने के लिए ई - श्रम अभियान चलाया गया । भीलकुआं एवं टीमेड़ा बड़ा जनजातीय स्वराज संगठन के सभी ग्राम पंचायत में योजनायों के प्रति जागृत किया गया व 2600 से ज्यादा ई – श्रम कार्ड बना कर ई – श्रम पोर्टल पर रजिस्टर किया गया । इस माह सभी ०९ जनजातीय स्वराज संगठन की मासिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमे ग्राम विकास योजना निर्माण एवं विरासत स्वराज यात्रा आयोजन अहम मुद्दा रहा । चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 के माध्यम से जरूरतमंद, पीड़ित बच्चो को सुविधाए उपलब्ध करवाना और गंभीर परिस्तिथि वाले बच्चों के बारे जानकारी देना। ये सभी कार्य करने में मुख्य भूमिका सहजकर्ता, स्वराज मित्र एवं सक्षम समूह, ग्राम विकास बाल अधिकार समिति एवं जनजतीय स्वराज संगठन के सदस्यों की रही। सभी संगठन की बैठक मै संगठन की मजबूती पर चर्चा की गई।

सच्चा बचपन :- सच्चा बचपन के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवों में से 352 गाँवो में ग्राम विकास बाल अधिकार समिति की बैठक का आयोजन किया। जिसका उदेश्य ग्राम सभा में सम्मलित ग्राम विकास योजना का फ़ॉलोअप एवं बालिका शिक्षा और ड्राप आउट बच्चो की सूची तैयार कर उन्हें शिक्षा से पुनः जोड़ना व अनाथ बच्चों को पालनहार योजना से जोड़ना रहा । कोरोना की तीसरी लहर को ध्यान में रखते हुए समुदाय व बच्चो को जागरूक करना रहा एवं कोरोना टीकाकरण के प्रति जागरूक किया गया । इस माह 105 ग्राम पंचायतो में बाल सभा का भी आयोजन किया गया जिसमे बच्चो को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना एवं खेल खेल के माध्यम से बच्चो का शारीरिक और मानसिक विकास करना रहा व बच्चो में नेतृत्व क्षमता का विकास करने पर चर्चा की गई । इस माह सच्चा बचपन कार्यक्रम के तहत अतिकुपोषित बच्चे जिनका आंकलन पोषण स्वराज अभियान के दौरान किया गया था ।जिसमे चिकित्सकीय जटिलता वाले बच्चो को कुपोषण निवारण केंद्र भेजा और बिना चिकित्सकीय जटिलता वाले बच्चो को आगंनवाडी केन्द्रों पर उचित पोषाहार व घर पर बने सम्पूर्ण आहार खिलाकर सामान्य स्थिति में लाने का प्रयास 15 दिन शिविर लगा कर उपचार एवं जागृत किया था उन बच्चो का पुनः निरक्षण कर फ़ॉलोअप किया गया, बच्चो की माता एवं परिवार के साथ बातचीत कर उन्हें समझाया गया । घर पर बच्चो का सम्पूर्ण आहार बनाने के लिए तिरंगा भोजन (तीन रंग का भोजन) जिसमे सफ़ेद यानी अनाज व पिला जिसमे दाल और हरा जिसमे हरी सब्जीयाँ शामिल हो इस तरह के भोजन को रोजाना बच्चो को खिलाना जरुरी है , जिससे बच्चो का शारीरिक और मानसिक विकास पूरी तरह से हो सके ।दिनांक 17.12.2021 को पंचायत समिति सज्जनगढ़ के सभा भवन में वाग्धारा संस्था द्वारा संचालित परियोजना पोषण के स्थायित्व को लेकर सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों के साथ ब्लॉक स्तरीय एक दिवसीय कार्यशाला बैठक का आयोजन किया गया । जिसमें वाग्धारा संस्था महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग, ग्रामीण एवं पंचायती राज विभाग के अधिकारी शामिल हुए । बैठक की अध्यक्षता पंचायत समिति सज्जनगढ़ के प्रधान श्री रामचंद्र डिंडोर ने की सर्वप्रथम वाग्धारा संस्था से श्री सोहन नाथ योगी ने बजाज परियोजना के माध्यम से क्षेत्र में किए गए प्रयास गतिविधियां सीख को साझा किया, साथ ही संबंधित विभागों से अपेक्षाएं कि गई । परियोजना के माध्यम से किए गए अच्छे परिणाम वाले प्रयासों को

मिलकर आगे बढ़ाया जाए, साथ ही इसके लिए रणनीति तैयार की गई । सहजकर्ता मान सिंह गरासिया एवं क्षेत्रीय सहजकर्ता श्री दीपक कुमार पारीक के द्वारा धरातल पर परियोजना के कार्यों को साझा किया गया, साथ ही जनजातीय स्वराज संगठन के अध्यक्ष श्री सवजी भगत व भलजी भाई डामोर के द्वारा संगठन के माध्यम से पोषण के लिए किए जा रहे प्रयासों को साझा किया गया । बैठक के अंत में प्रधान ने कुपोषण, हलमा पद्धति, महिला संशक्तिकरण एवं अपनत्व की भावना, जैविक खेती व सक्षम समृह एवं ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के माध्यम से नरेगा में सामृहिक व व्यक्तिगत कार्यों के प्रस्ताव को लेकर वार्षिक कार्य योजना में शामिल करने के लिए जानकारी दी । साथ ही अगर यह प्रस्ताव सक्षम समृह के सदस्यों के द्वारा ग्राम पंचायत के माध्यम से आए तो इन्हें जल्द ही स्वीकृति के लिए आदेशित किया जाएगा । महात्मा गांधी नरेगा के अंतर्गत पोषण बाड़ी को शामिल करने के लिए कहा । कार्यक्रम में धन्यवाद एवं आभार श्री दिनेश डिंडोर

सच्ची खेती:- सच्ची खेती कार्यक्रम के तहत 354 सक्षम समूह की बैठक की गई । बैठक के दौरान बीज विविधता पर अभ्यास , अनुमानित उत्पादन , फसल की स्थिति पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। वर्तमान परिस्थिति में अधिक उत्पादन पैदावार के लिए समुदाय द्वारा रासायनिक खाद और दवाई व कीटनाशक का उपयोग



ज्यादा किया जाने लगा है , जिसके कारण लोगो के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने लगा है । जिसका उदाहरण कोरोना माहमारी में देखने को मिला है । इसी को ध्यान में रखते हुए संस्था द्वारा जैविक खेती जिसके अंतर्गत वर्मी खाद, कम्पोस्ट पिट व कीटनाशक हेतु दशपर्नी दवाई व बीज उपचार आदि पर जनजातीय समुदाय के 356 गाँवो में महिला किसानो का प्रत्येक गाँव में एक समूह बना हुआ है । उस समूह को हर माह प्रशिक्षित करना और उन महिलाओं के द्वारा गाँव और रिश्तेदारी में अन्य किसानो को जैविक खेती के बारे में जागरूक करने का काम किया जा रहा है। वागुधारा संस्था द्वारा सच्ची खेती अंतर्गत जैविक तरीकों से परम्परागत खेती को वापस बहाल करवाने हेतु प्रयास किये जा रहे है तथा जैविक कीटनाशक, जैविक खाद इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है इस माह में PGS जैविक ग्रुप की कुल 91 मीटिंग हुई है जिसमें जैविक कृषि संबंधी क्रियाकलाप के बारे में किसानों को जागृत किया गया है तथा जैविक कृषि पद्धति अपनाकर इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया है तथा अधिक से अधिक किसान जो जैविक कृषि में रुचि रखते हैं उन्हें सभी जैविक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है।

विश्व मृदा दिवस: - 05 दिसम्बर 2021 को इकाई के सभी 356 गांवों में विश्व मुदा दिवस बड़ी धूम धाम से हर वर्ष की तरह मनाया गया । मिट्टी के साथ साथ बीज , फल , सब्जियाँ, जल आदि की पूजा कर उन्हें सहेज कर रखने की प्रतिज्ञा ली गई । प्राकृतिक संसाधनों का सिर्फ दोहन ही नहीं करना वरन उन्हें पुनः भरना भी आवश्यक हैं तभी संसाधन सतत रहे पायेंगें । गाँव में रेली निकालकर^{ें}, हलमा कर मीटिंग कर , शिक्षा प्रद सामग्री वितरित कर लोगो को मिट्टी के प्रति संवेदनशील किया । संस्था द्वारा यह दिवस 2015 से मनाया जा रहा है जो आज बड़े व्यापक स्तर पर पहुँच चूका है आज 1000 गाँवो में एक साथ मनाया जा रहा है। मिट्टी को माता मान पूजा अर्चना की गई, साथ ही संकल्प लिया गया की भूमि कटाव रोकने के लिए ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगायेंगे, मिट्टी को सतत बनाने के लिए जैविक खेती कर उसकी सेहत के साथ साथ अपनी सेहत को भी सुधारना है ।

राज्यस्तरीय एवं जिलास्तरीय अधिकारीयों का आमलीपाड़ा गाँव में दौरा :-कुशलगढ़ के आमलीपाड़ा गाँव में राज्यस्तरीय एवं जिलास्तरीय अधिकारीयों का दौरा जैविक खेती को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए नई योजना निर्माण के उद्देश्य हेतु चीफ़ मिनिस्टर राजस्थान इकॉनमी ट्रांसिमशन एडवाइजरी कॉन्सिल द्वारा किया गया । राज्य सरकार द्वारा गठित यह टीम राज्य में चार अलग जिलो में गैर सरकारी संस्थाओ द्वारा जैविक खेती के लिए किये जा रहे कार्यों का मूल्यांकन कर सीधे मुख्यमंत्री को कार्यालय रिपोर्ट करेंगे। बांसवाडा जिले में वाग्धारा संस्था द्वारा समन्वित खेती तंत्र को विकसित करने हेतु किये जा रहे प्रयासों को देखा ।इस टीम में शामिल अधिकारी जिसमें राज्य सरकार के खाद्य सुरक्षा विभाग से सुनीता शर्मा,



पशुपालन विभाग से डॉ. विशाल मेहता, कृषि विभाग से अर्जुन चौधरी, डॉ. किशन लाल व बांसवाड़ा जिले से मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद, एक्सईएन महात्मा गाँधी रोजगार नटवर लाल, जॉइंट डायरेक्टर पशुपालन विभाग डॉ. अनुज बगेल, राजिका से जिला परियोजना अधिकारी दीनबंद भट्टें, प्रबंधक सरस डेयरी से कमलेश कुमार , उद्यानिकी विभाग से जलज उपाध्याय, शिक्षा विभाग से शैलेन्द्र भट्ट , जिला बाल सुरक्षा अधिकारी जयमल राठौड़, जिला रसद अधिकारी हजारी लाल, राजस्थान स्टेट सीड कारपोरेशन से योगेश , कृषि विभाग से रामकिशन वर्मा, कमलेश कुमार मीणा, डॉ. के .सी . शर्मा , श्याम लाल सालवी एवं कुशलगढ़ पंचायत समिति के विकास अधिकारी के नेतृत्व में संबंधित विभाग के अधिकारी, सरपंच आमलीपाड़ा मौजूद रहे । यह अध्यन CEEW संस्था द्वारा किया जा रहा है और साथ नेशनल् कोल्लीजन फॉर् नेचुरल फार्मिंग नेटवर्क द्वारा इस अध्यन में सहायता की जा रही है, इसी नेटवर्क से वाग्धारा भी जुड़ा है। संस्था सचिव जयेश जोशी , सच्ची खेती थीम के पी.एल.पटेल, सच्चा बचपन थीम के माजिद खान ,सच्चा स्वराज थीम के परमेश पाटीदार ने अथितियों का स्वागत कर वाग्धारा संस्था द्वारा जनजाति क्षेत्र में खेती के लिए किये जा रहे प्रयासों को साझा किया । कुशलगढ – सज्जनगढ क्षेत्र की विधायक श्रीमती रमिला खडिया ने भी अधिकारीयों से चर्चा कर सुझाव दिए ।क्षेत्र में जैविक खेती करने वाले किसान श्री प्रकाश डामोर मान सिंह ,कन्नू डामोर के यहां जैविक पोषण बगिया , जैविक खाद , जैविक दवाई, जैविक कीट प्रबंधन , फलदार पौधे, फलदार पौधों की कलम से तैयार किए गए अच्छी गुणवत्ता वाले तैयार पौधे, गन्ने, आम, अमरूद, पपीता, हल्दी, अदरक,मिर्ची केला, परिवार के स्तर पर बीज प्रबंधन, खाद्य सुरक्षा, पोषण एवं जैविक खेती में पशुपालन की भूमिका, जैव विभिताता, कृषि में महिलाओं की भूमिका, जैविक खेती करने में आ रही बाधा जैसे पशुपालन में उत्पादकता में कमी , प्रारंभिक 03 वर्षो में जैविक खेती के उत्पादन में कमी, ढालू जमीन से मिट्टी , सिंचाई के लिए संसाधन एवं स्रोत की कमी, उन्नत नस्ल में सिरोही ब्रीड की बकरी एवं उन्नत नस्ल की मुर्गीपालन की मांग आदि को देखा गया एवं चर्चा रही । महात्मा गाँधी नरेगा के अंतर्गत पशु शेड निर्माण, भूमि समतलीकरण , जल मुदा संरक्षण के कार्य आदि की मांग की गई । इसके बारे में इन किसानों से जयपुर, दिल्ली एवं बांसवाड़ा से आए सभी अधिकारियों ने जानकारी ली और बताया गया कि यह तरीका काफी अच्छा है और हमारी तरफ से कोशिश रहेगी कि वाग्धारा संस्था का यह कृषि मॉडल राजस्थान में सब जगह लागू हो और किसानों को ज्यादा से ज्यादा जैविक खेती के लिए प्रेरणा मिले । इसी के साथ श्रीमान अर्जुन जी ने गांव स्तर पर एक समूह चर्चा में भी सभी किसानों को जैविक खेती में और नया जोड़ने के लिए जानकारी दी । उपस्थित पशुपालन विभाग, कृषि विभाग, आईसीडीएस विभाग, शिक्षा विभाग एवं मनरेगा विभाग से आए अधिकारियों ने अपने अपने विचार व्यक्त किए और किसानों को आगे किस प्रकार की आवश्यकता है खेती व जीविकोपार्जन के लिए इस बारे में किसानों के साथ चर्चा की गई । किसानों ने भी खेती में आने वाली समस्याओं के लिए बढ़-चढ़कर बताया व सरकार की तरफ से अलग अलग तरह की मांग रखी गई । इस विजिट में बैठक में वागुधारा की अहम भूमिका किसानों को ज्यादा से ज्यादा फायदा दिलाने की रही एवं समूह चर्चा के बाद सभी अधिकारियों द्वारा बीज उपचार, बीज रखरखाव एवं बीज सहेजना को लेकर आमलीपाड़ा के किसान कल सिंह डामोर, प्रकाश डामोर, अनीता डामोर के यहां अलग-अलग बीज, सब्जी बीज, अनाज, धान व सुखमनी रजन, चना भाजी, ठीमडा , मेथी, काचरी की सुखमणि देख जानकारी ली गई । इसी के साथ पोषण बगिया में दशपर्णी दवाई, वर्मी खाद, कम्पोस्ट खाद , जीवामृत का उपयोग व उसको तैयार करने की विधि के बारे में चर्चा की गई । बैठक में वागुधारा से डॉ.प्रमोद रोकडिया,पी.एल.पटेल, सोहन नाथ जोगी, दीपक कुमार पारीक, दिनेश डिंडोर, हिरण इकाई के सहजकर्ता एवं ग्रामीण किसान उपस्थित रहे ।

> सोहन नाथ जोगी जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई हिरन

!! सब ने मारू राम-राम !!

प्रिय संगठन के साथियों जनजातीय स्वराज संगठन माही में इस माह 🛭 हमने शुरुआत विश्व मृदा दिवस से की निश्चित ही उत्साह हममे काफी था गाँव के जगह-जगह से अलग अलग मिट्टी, विभिन्न प्रकार के बीज और इन सब पर समुदाय के साथ सीधा मिट्टी को लेकर संवाद और इससे भी सुखद मिट्टी की महत्ता को स्वयं समूह की बहनों द्वारा प्रेषित करना । बहुत मजा आया साथियों, यही प्रयास वर्षो तक हमारी मिट्टी माता के साथ बना रहे । इसके पश्चात संगठनो की बैठक लेकर व्यवस्थित कार्य योजना बना कर श्रमिक स्वराज अभियान का आयोजन किया गया जिसके तहत आदिवासी समुदाय में श्रमिको को पहचान मिली । इस अभियान के माध्यम से समुदाय स्तर पर लोगो में एक जागरूकता का प्रचार प्रसार हुआ । इसके साथ ही आदिवासी समुदाय को विभिन्न सरकारी योजनाओ एव उनसे प्राप्त लाभों की भी जानकारी प्राप्त हुई । इस अभियान में जनजातीय स्वराज संगठन ने अपनी प्रमुख भूमिका निभाई, उनके द्वारा अभियान पूर्व बैठक कर लोगो में कैंप आयोजन के पूर्व जानकारी दी गई एंव सम्बन्धित दस्तावेज जो श्रमिक कार्ड बनाने हेतु आवश्यक थे उनकी जानकारी भी लोगो तक पहुंचाई गयी जिससे लोगो ने अपने दस्तावेज पूर्ण कर कैंप में भागीदार निभाई । इसके साथ ही इस कार्यक्रम में तीन ई-मित्र के साथ वागुधारा संस्थान के द्वारा इस कैंप का आयोजन किया गया, जिससे पूर्ण रूप से ये दिशा निर्देश दिया गया की वे लोगो को कम समय में अधिक लाभ पहुँचाये ताकि समुदाय में श्रमिक अपनी पहचान बना पाए एंव इस कार्ड के माध्यम से अनेक सरकारी योजनाओ का लाभ प्राप्त कर सके। **सच्चा स्वराज** - इस माह जनजातीय स्वराज संगठन के बैठको के माध्यम से समुदाय स्तर पर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की बैठको में अपनी भागीदारी निभाते हुए उन्होंने कुछ सामाजिक मुद्दों का चयन किया, जिससे वे अपने संगठन को मजबूत करने को लेकर सही दिशा में बढ़ सके । जिसमे प्रमुखत मुद्दे ये रहे कि जंगली जानवरों को लेकर फसल की सुरक्षा करना एवं साथ ही साथ उनसे होने वाले ग्रामीणों के शारीरिक नुकसान को देखना एवं उस हेतु सम्बन्धित विभाग को जानकारी देने के साथ उस पर प्रस्ताव बनाकर देना । जिनसे वे अपने जीवन और फसलो को उनसे सुरक्षित कर सके । इसके साथ ही संगठन के द्वारा वर्तमान में नहरों की मरम्मत का मुद्दा भी प्राथमिकता के साथ लिया गया क्यूंकि अभी वर्तमान में गेंहू की फसल का रोपण चल रहा है जिस हेतु किसानो को पानी की आवश्यकता हैं , परन्तु नहर की मरम्मत न होने के कारण पानी की उपलब्धता कम रहती है जिसके कारण किसानो को परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस हेतु बैठक में ये चर्चा की गयी के वे इस मुद्दे पर प्रस्ताव तैयार कर माही परियोजना के विभाग को देंगे और जल्द ही नहरों के मरम्मत के कार्य को शुरू करवाएंगे ताकि उन्हें पर्याप्त पानी मिल सके । इसी प्रकार जनजातीय स्वराज संगठन आसपुर बैठक की बात करे तो वहां ये मुद्दा निकलकर आया की प्रधानमन्त्री किसान सम्मान निधि योजना की साईट न चलने से लोगो को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है जिससे वे इस योजना का फायदा नही ले पा रहे है। इस मुद्दे हेतु उनके द्वारा ये तय किया गया की वे इस मुद्दे को लेकर उनके द्वारा प्रस्ताव तैयार किया जायेगा

एंव SDM को ज्ञापन सोंपा जायेगा जिससे इस समस्या का जल्द निवारण किया जायेगा । सच्चा बचपन - साथियों सच्चे बचपन में हमने आपके साथ मिलाकर इस माह में नियमित बाल पंचायतो का आयोजन करते हुए बच्चो में संवाद के तरीको में बदलाव देख रहे है जिसमे इसी माह हमने गोलियावाडा में सरपंच के वहां बाल पंचायत बालसमूह को कार्य करते हुए देखा इसके तरंत बाद उसने हमारे कार्यरत टीम को संपर्क किया और बच्चो को श्रम कार्य करने से बचाया तो एक तरह से देखा जाए तो हमारे बाल पंचायत के सदस्य अब बच्चो के अधिकारों को समझने लगे है और भविष्य में आपको अथवा हमे गाँव में एक नया साथी मिलेगा जो बच्चो के अधिकारों का हनन नहीं होने देगा । साथ ही पिछले अगस्त 2021 में हमने संगठन एवं जिला प्रशासन के सहयोग से स्वराज पोषण अभियान चलाया था जिसके बाद हालत कुछ स्तर तक सामान्य हुए थे इसके बाद इस बार पुनः इन सभी बच्चो की जाँच की गई जिसके बाद यह सूची विभाग को प्रेषित की गई । साथियों इन सब चीजो में अगर हम नियमित संवाद करते है तो हमारे संगठन भी आगे आकर कुपोषित बच्चो के माता पिता को उनके स्तर पर किस प्रकार से देसी छोटा अनाज का उपयोग कर घर से ही बच्चे को पुनः सामान्य अवस्था में लौटा सकते है इस पर चर्चा नियमित रहेगी । जिसका अपेक्षित परिणाम हमको भुंगड़ा,अमर सिंह का गढ़ा और घाटोल में देखने को मिला है। इस बार फिर से विद्यालयों से नहीं जुड़े बच्चे और बाल श्रम करते हुए बच्चो का मुद्दा ग्राम स्तर की ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति ने उठाया है और इसकी जिम्मेदारी भी ली है जो हमे लगता है की संगठन अपनी भृमिका समझने का प्रयास लगातार कर रहा है । **सच्ची खेती** – साथियों मुदा दिवस का आयोजन इस बार बड़े धूम धाम से किया गया । इस बार बहनों ने आगे रहकर मिट्टी की महत्ता पर बात की जो निश्चित ही सुखद था जब मिट्टी की महत्ता को एक जननी बताती है किस प्रकार से मिट्टी मानव जीवन के लिए उपयोगी है और क्या समनता मुझ नारी और मिट्टी में है सुनना या विस्तार करना मुश्किल है पर बहने अब ख़ुद के खाध्य के लिए जैविक की तरफ जा रही है और इससे भी बड़ी बात ये है की हमारी बहने लघु सीमान्त किसान होते हुए भी अपनी आजीविका जैविक में ढूंढ रही है । इस बार हमे वो देखने को मिला जिसकी हम मात्र चर्चा करते थे,सक्षम समृह की बैठकों का आयोजन हो रहा था तभी हमारी बहनों को पता चला की एक बार पुनः हमारी संस्था कुपोषित बच्चो की जाँच करवा रही है जिसमे बहनों ने ही सुझाव दिए की इस बार हम हमारे पास संग्रहित सब्जी बीजो को गाँव में उन बहनों को पहुचाएंगे जिनके बच्चे अभी भी कुपोषित अवस्था में है और ये ही देखते हमारी बहने सहयोग का हाथ बढ़ाते हुए आगे आई और जनजातीय स्वराज संगठन में भी यह बात रखी आने वाले समय में निश्चित ही हम सब मिलकर इन बच्चों के उत्तरदाई होंगे और प्रशासन के भरोसे कम और हमारे भरोसे ज्यादा रहेंगे। इसके पश्चात हमारे कुल 353 सक्षम समूह में इस बार घरेलू उपयोग हेतु सब्जी वाड़ी देखने को मिल रही है कही न कही अब हमारी बहने बीजो को एक बार पुनः बचा रही है और अपने आहार में 07 से 08 प्रकार की सब्जियां शामिल कर रही है इसके साथ ही जैविक खेती हेतु इस बार 78 समूहों में दशपनीं या जीवामृत बनाया है जिसको अपनी फसलो में कीटनाशक के रूप में उपयोग हेतु लेगी। साथियों एक बार पुनः में कहूँगा की बदलाव हमको ही लाना होगा जब तक हम नही बदलेंगे तब तक समस्याए आती रहेगी हमे बदल कर गाँव बदलना है गाँव बदलेगा तो खंड,जिला बदलेगा जब इसमें बदलाव शुरू हुए तो हम एक बार फिर स्वराज की कल्पना करते हुए देश को बदलेंगे..

वैक्सीन अचानक से कोई जादू नहीं कर देगा मास्क पहनना और आपस में दुरी रखना भी जरुरी होगा... हेमन्त आचार्य, जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई माही, वाग्धारा





!! हेता वागड़ वासीयो ने जय गुरु !!

समुदाय के मेरे सभी साथियों एवं 'वातें वाग्धारा नी' के सभी पाठकों को मेरी ओर से जय गुरु । आशा है की आप सभी स्वस्थ एवं कुशल होंगे । सर्दी का मौसम शुरू हो गया है, खेतो में अब धान, मक्का गेहूं की फसल का अंकुरण हो गया है, कुछ दिन बारिश भी आई जिससे ठण्ड भी बढ़ गई । धान, गेहूं की फसल के लिए बारिश का आना एक तरह से अच्छा है, जिससे जिन किसान भाइयों के पास कोई सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता नहीं है उन किसान भाइयों के लिए बारिश प्रकृति का उपहार है, जिससे फसल को बढ़ने में मदद मिलेगी, आशा है इस बार आपकी फसल का नुकसान कुछ कम हुआ होगा । बहुत से लोगों ने छोटे अनाज की खेती की और उनका उत्पादन भी अच्छा हुआ है मैंने काफी किसानो के खेतो में कुरी एवं माल की फसल लहराते देखी, और कम बारिश के बावजूद उनका उत्पादन अच्छा देखने को मिला है । पर जब हम सच्ची खेती की बात करते है, तो हमें ये ध्यान देना होगा की खेती हमारी तभी सम्पूर्ण हो पायेगी जब हम बाजार से अपनी निर्भरता को कम करेंगे और अपनी मुदा को स्वस्थ्य बनायेंगे व बीज एवं खाद को लेकर आत्मनिर्भर बनेंगे । जब स्वयं का बीज हमे उपलब्ध हो पायेगा तभी खेती में हमे स्वराज देखने को मिल सकता है । और अपना बीज स्वराज लाने के लिए हमे बहुत सी चीजों का ध्यान रखना पड़ेगा, और इस कड़ी में सबसे महत्वपुर्ण है घर पर ही अपना बीज संयोजन करना और समुदाय में बीज संयोजन तंत्र को बढ़ावा देना । जिसमें अपने खुद के घर पर हर तरह के परम्परागत बीजों का भण्डार हो, और बाजार तक जाने की जरुरत हमें नहीं पड़े । तो जैसे की हर माह हम अपने इकाई की गतिविधियों को आपके साथ साझा करते है तो इस माह भी कुछ गतिविधि हमारे द्वारा की गई जो आपको बताना चाहेंगे। **कृषि एवं जनजातीय सम्प्रभृता अभियान 2021–22 मुदा स्वास्थ्य पर संवाद कार्यक्रम** वागुधारा परिसर में सभी सहजकर्ता और स्वराज मित्र के साथ मुदा स्वास्थ्य पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें सभी सहजकर्ता और स्वराज मित्र नें पिछले वर्ष का विश्व मृदा दिवस कार्यक्रम के अनुभव साझा किये व पिछले वर्ष में आयोजित की गई गतिविधियों को बताया, कृषि विशेषज्ञ पी. एल. पटेल जी ने विश्व मुदा दिवस को बांसवाड़ा जिले में 1000 गांवो में जनजातीय स्वराज संगठन, सक्षम समूह, जैविक किसान समूह, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति व गांव के अन्य ग्रामीण लोगों के साथ बड़े धूम धाम से मनाने के लिए मार्गदर्शित किया, जिसमे मानगढ़ इकाई के कुल 276 गांव में विश्व मुदा दिवस को मनाया, कषि विशेषज्ञ पी. एल. पटेल जी ने मिड़ी के सरक्षण पर बताया की मदा हमें जीवित रखने के लिए फसलों को उगाती है. जिससे हमारा जीवन है. हम सभी मिलकर इस महोत्सव को बड़े धूम धाम से मनाना है, जिससे हर गाँव में भूमि पूजा, मिट्टी पूजा की आरती हो और सभी के साथ धरती माता को सुरक्षित रखने का एक सार्थक प्रयास हो, रविन्द्र जी रकवाल ने मुदा स्वास्थ्य पर सभी को मार्ग दर्शित किया और मुदा स्वास्थ्य के मुख्य घटकों के बारे जानकारी से अवगत कराया । संस्था के सचिव जयेश जी जोशी ने सभी सहजकर्ता व स्वराज मित्र को मृदा दिवस के लिए बताया की मिट्टी हमारी संस्कृति है, सर्वोपिर है, हमारे समाज का मूल्य है, और इस वैश्वीकरण के दौर में किसान भाई अपने खेतों में रासायनिक पदार्थो का उपयोग कर रहे है, उनको इस विशेष दिन को मुदा को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करना है, जिससे आदिवासी समाज की संस्कृति की धरोहर को बचाया जा सकता है । **1. मिट्टी से स्वराज** : 5 दिसम्बर 2021 अन्तराष्ट्रीय मृदा दिवस महोत्सव कार्यक्रम मिट्टी आपड़ी पालनहार, रोग मटावी करो हणगार हम है रक्षक, हम है पोषक, हम संरक्षण प्रकृति के, आदि अनादि हम अविनाशी, हम संवाहक सुष्टि के परिहत चिंतन मनन हमारा, हम पुरोधा समुष्टि के, वसुधा के हित जीवन अपना, हम राही सुख समृद्धि के विश्व मुदा दिवस के अवसर पर 5 दिसम्बर को मानगढ इकाई के 276 गांवो में बड़े उत्साह के साथ ढोल बजाकर रैली के साथ धूम धाम से मनाया गया, जिसमे गांव के लोगो ने मृदा स्वास्थ्य के संकल्प लिए, मिट्टी पूजा की, धरती माता की आरती की । विश्व मृदा दिवस पर जनजातीय स्वराज संगठन, सक्षम समूह की बहनों ने इस खास दिन को सफल बनाने के लिए अपना महवपूर्ण योगदान दिया और गावों में जन जागरूकता का कार्य किया । विश्व मृदा दिवस पर सामुदायिक सन्देश को जन जन तक पहुँचाने के लिए एक साथ हजारो लोगो ने अलग अलग गांवो में गतिविधियों का आयोजन किया, व अपने गांव की मिट्टी को बचाने की एक साथ शपथ ली । संस्थान के सच्ची खेती कार्यक्रम अधिकारी पी. एल. पटेल जी, सच्चा स्वराज कार्यक्रम अधिकारी परमेश जी पाटीदार, सच्चा बचपन कार्यक्रम अधिकारी माजिद जी खान व रविन्द्र जी रकवाल ने विश्व मुदा दिवस पर मुदा स्वास्थ्य सुधार पर ज्यादा से ज्यादा लोगों तक सन्देश पहुँचे इसके लिए वाग्धारा टीम को प्रेरित किया और मुदा दिवस को सफल बनाने के लिए टीम के साथ कार्य योजना बनाई व अलग-अलग गांवों में जाकर कार्यक्रम में भाग लिया व लोगों के साथ मिट्टी दिवस को धूम धाम से मनाया एवं मिट्टी स्वास्थ्य पर ग्रामीणों के साथ संवाद किया । 2. श्रमिक स्वराज अभियान का शुभारम्भ दिनांक : 13 दिसम्बर से जिला प्रशासन एवं वाग्धारा संस्था के संयुक्त तत्वाधान में श्रमिक स्वराज अभियान का शुभारंभ किया, जिसमें बांसवाडा जिले के घाटोल, कुशलगढ़, सज्जनगढ़, गागड़तलाई व आनंदपुरी के 202 ग्राम पंचायत पर श्रमिक स्वराज अभियान का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे मानगढ़ इकाई की 60 ग्राम पंचायत में श्रमिक स्वराज अभियान का आयोजन किया जायेगा । प्रत्येक ग्राम पंचायत पर रथ जायेगा और ई-मित्र संचालक के द्वारा ग्रामीणों के निशृल्क ई-श्रम कार्ड बनेंगे अभियान का मुख्य उद्देश्य श्रमिक पहचान कार्ड बनाना, श्रमिकों को उनके हक के लिए जागरूक बनाना है एवं सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है जिसमें प्रधान मंत्री श्रम योगी –धन पेंशन योजना (PM-SYM) का लाभ दिलाना, असंगठित कामगारों के लिए सरकार की योजनाओं से जोड़ना है - • विभिन्न प्रकार के सामाजिक सुरक्षा लाभों का वितरण ई-श्रम के द्वारा किया जायेगा। • आपदा या महामारी जैसी कठिन परिस्थितियों में केंद्र व राज्य सरकारों से मदद प्राप्त करने में होगी आसानी। • पीएम-एसबीवाई (PM-SBY) के तहत दुर्घटना बीमा कवरेज मिलेगा । **3. स्वराज संवाद कार्यक्रम** दिनांक 25 दिसम्बर को वाग्धारा परिसर कुपड़ा में स्वराज संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अथिति के रूप में श्री अशोक जी चौधरी का वागुधारा सचिव जयेश जी जोशी के द्वारा साफा पहनाकर स्वागत और अभिनन्दन किया गया। श्री अशोक जी चौधरी ने वागुधारा टीम को स्वराज की परिकल्पना से परिचित कराया जिसमे उन्होंने बताया, जो आदिवासी समाज है, मानव सभ्यता जो 50 लाख साल से शुरू हुई है इसमें आदिवासी समाज प्रकृति को सदैव सर्वोपरि मानता है व प्रकृति को बचाने का प्रयास करता है । आदिवासी समाज को विकास नहीं चाहिए, उनको केवल वो चाहिए जो प्रकृति ने उनको दिया उसे सुरक्षित रखने के लिए आदिवासी समाज प्रकृति से जुड़ा हुआ है । ये जो हमें प्रकृति ने मूल्य दिया, प्रकृति संसाधनों का कम से कम उपयोग लेना यह जो बात है, ऑदिवासित्व बात है, आदिवासी कोई जाती नहीं है ऑदिवासी एक जिन्दा दर्शन है, जो प्रकृति आज भी बचाने में लगे हुए है, जबकि देश में 10 प्रतिशत लोगों के पास ताकत है जो केवल विकास चाहते है, स्वराज नहीं चाहते, जयेश जी नें बताया की

वाग्धारा संस्थान स्वराज की परिकल्पना को साकार करने के लिए 30 वर्षो से अग्रसर है और आदिवासी समाज को जागरूक बनाने के लिए हमेशा प्रयासरत है, जिमसें बांसवाड़ा जिले के 1000 गांवो में सच्ची खेती, सच्चा बचपन, सच्चा स्वराज के लिए आदिवासी समाज के साथ कार्य कर रही है, जिससे गाँधी जी के ग्राम स्वराज के सपने को साकार करने के लिए समय समय पर गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है । और प्रत्येक गांव में सक्षम समूह की बहने सच्ची खेती पर गांव की बाकी बहनों को सक्षम बनाने का कार्य कर रही है, आपके इन विचारों ने वाग्धारा संस्थान के टीम को स्वराज की परिकल्पना को साकार करने के लिए उर्जा का संचार किया है।

> गोपाल सुधार कार्यक्रम अधिकारी वाग्धारा





सर्दी में सियेल/बथुआ एक स्वारथ्यवर्धक भाजी बच्चा हो या बूढ़ा, सबके लिए फायदेमंद है बथुआ !!

हमारे देश में बथुआ का इस्तेमाल खानपान में प्राचीन समय से होता आ रहा है।चरक संहिता, सुश्रुत संहिता इत्यादि प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी बथुए का उल्लेख मिलता है। इसको साग के रूप में, दाल में डालकर, पराठे बनाकर, पकोड़ी में डालकर खाया जाता है जिसे वागड़ में लोग सियेल कहते हैं। पुराने समय में हमारी दादी-नानी डैंड्रफ साफ करने के लिए बथुवे के पानी से सिर धोया करती थीं। घरों का रंग हरा करने के लिए दीवारों का पलस्तर कराते समय सीमेंट में लोग बथुवा मिलाते थे। जब तक इसकी फसल रहती है इसे ताजा खाया जाता है। इसके पौष्टिक गुणों के कारण मेथी की तरह सुखाकर भी रखा जाता है। सुखे बथुए को आलु के साथ सब्जी की तरह पकाया जाता है या फिर पत्तियों का चूरा बनाकर दाल के साथ मिलाकर भी खाते हैं।

बथुआ/ सियेल रबी की फसल के साथ खरपतवार के रूप में उगा हुआ पाया जाता है तथा हर सब्जी मार्केट में आसानी से मिल जाता है, बथुआ की खेती पूरे भारत में की जाती है। देश भर में लोग बथुआ का सेवन करते हैं। आप भी जरूर बथुआ को खाते होंगे, लेकिन आपको केवल यह पता होगा कि बथुआ को साग/भाजी के रूप में खाया जाता है। अधिकांश लोगों को बथुआ के औषधीय गुणों के बारे में ज्यादा जानकारी ही नहीं है। बथुआ एक औषधी भी है,और बथुआ खाने के फायदे कई रोगों में मिलते हैं । बथुआ की पत्तियों में विटामिन ए की सर्वाधिक मात्रा 11300 IU (international unit) पाई जाती है।बथुआ विटामिन ए का प्रमुख स्रोत है। एक शोध के अनुसार विटामिन ए की सर्वाधिक मात्रा बथुआ में पाई जाती है। इसके अलावा इसमें विटामिन बी और सी भी पाया जाता है। बथुआ विटामिन ए का प्रमुख स्रोत है। इसमें बहुत सा विटामिन ए, कैल्शियम, फॉस्फोरस और पोटैशियम होता है।

विटामिन और मिनरल्स से होता है भरपूर, ठंडी में अच्छा आहार:- बथुआ/ सियेल का पौधा विटामिन व मिनरल्स से भरपूर होता है। ठंडी में यह बेहतर आहार है जो शरीर को गर्मी देने के साथ ही तमाम रोगों से भी बचाता है। विटामिन बी व विटामिन सी से भरपूर होता है। इसमें कैल्शियम, मैग्नीशियम, मैगनीज, सोडियम, आइरन, फास्फोरस, पोटैशियम, जिंक आदि मिनरल्स पाए जाते हैं। सौ ग्राम कच्चे बथुए के पत्तों में 7.3 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 4.2 ग्राम प्रोटीन व चार ग्राम पोषक रेशे होते हैं।100 ग्राम बथुआ/ सियेल में अनुमानित पोषक तत्व इस प्रकार हैं- जल- 89.6 ग्राम. प्रोटीन- 3.7 ग्राम. वसा- 0.4 ग्राम, रेशा- 0.8 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट- 2.9 ग्राम, कैल्शियम- 150 मि.ग्रा., फॉस्फोरस- 80 मि.ग्रा., लौह तत्व- 4.2 मि.ग्रा., खनिज लवण- 2.2 ग्राम, कैरोटीन- 1740 मा.ग्रा., थायेमिन- 0.01 मि.ग्रा., रिबोफ्लेविन- 0.14 मि.ग्रा., नियासिन- 0.6 मि.ग्रा., विटामिन सी- 35 मि.ग्रा., ऊर्जा- 30 कि. कैलोरी। बथुए में पारा, सोना और क्षार भी पाया जाता है।

बथुआ खाने के फायदे :- बथुआ/ सियेल एक ऐसी सब्जी है जिसके गुणों से ज्यादातर लोग अपरिचित हैं। ये छोटा-सा दिखने वाला हराभरा पौधा काफी फायदेमंद होता है, सर्दियों में इसका सेवन कई बीमारियों को दूर रखने में मदद करता है। बथुए में आयरन प्रचुर मात्रा में होता है, बथुआ न सिर्फ पाचनशक्ति बढ़ाता बल्कि अन्य कई बीमारियों से भी छुटकारा दिलाता है। गुजरात में इसे चील भी कहते है। बथुआ एक ऐसी सब्जी, साग या भाजी है, जो गुणों की खान होने पर भी बिना किसी विशेष परिश्रम और देखभाल के खेतों में स्वतः ही उग जाता है। एक डेढ़ फुट का यह हराभरा पौधा कितने ही गुणों से भरपूर है। बथुआ के परांठे और रायता तो लोग चटकारे लगाकर खाते हैं, लेकिन वे इसके औषधीय गुणों से ज्यादा परिचित नहीं है, इसकी पत्तियों में सुगंधित तैल, पोटाश पाये जाते हैं। दोष कर्म की दृष्टि से यह त्रिदोष (वात, पित, कफ) को शांत करने वाला है। आयुर्वेदिक विद्वानों ने बथुआ को भूख बढ़ाने वाला पित्तशामक मलमूत्र को साफ और शुद्ध करने वाला माना है। यह आंखों के लिए उपयोगी तथा पेट के कीड़ों का नाश करने वाला है। यह पाचनशक्ति बढ़ाने वाला, भोजन में रुचि बढ़ाने वाला पेट की कब्ज मिटाने वाला और स्वर (गले) को मधुर बनाने वाला है। गुणों में हरे से ज्यादा लाल बथुआ अधिक उपयोगी होता है। इसके सेवन से वात, पित्त, कफ के प्रकोप का नाश होता है और बल-बुद्धि बढ़ती है। लाल बथुआ के सेवन से बूंद-बूंद पेशाब आने की तकलीफ में लाभ होता है। टीबी की खांसी में इसको बादाम के तेल में पकाकर खाने से लाभ होता है। नियमित कब्ज वालों को इसके पत्ते पानी में उबाल कर शक्कर (चीनी नहीं) मिला कर पीने से बहुत लाभ होता है। यही

पानी गुर्दे के लिए भी लाभकारी है। इस पानी से तिल्ली की सूजन में लाभ होता है। सुजन अधिक हो तो उबले पत्तों को पीसकर तिल्ली पर लेप लगाएं। लाल बथुओं हृदय को बल देने वाला, फोड़े-फुंसी, मिटाकर खून साफ करने में भी मददगार है। बथुआ लीवर के विकारों को मिटा कर पाचन शिक्त बढ़ाकर रक्त बढ़ाता है। शरीर की शिथिलता मिटाता है। लीवर के आसपास की जगह सख्त हो, उसके कारण पीलिया हो गया हो तो छह ग्राम बथुआ के बीज सवेरे शाम पानी से देने से लाभ होता है । बीजों को सिल पर पीस कर उबटन की तरह लगाने से शरीर का मैल साफ होता है, चेहरे के दाग धब्बे दूर होते हैं। तिल्ली की बीमारी और पित्त के प्रकोप में इसका साग खाना उपयोगी है। इसका रस जरा-सा नमक मिलाकर दो-दो चम्मच दिन में दो बार पिलाने से पेट के कीडों से छुटकारा मिलता है। पत्तों के रस में मिश्री मिला कर पिलाने से पेशाब खुल कर आता है। इसका साग खाने से बवासीर में लाभ होता है। पखाना खलकर आता है। दर्द में आराम मिलता है। इसके काढ़े से रंगीन तथा रेशमी कपड़े धोने से दाग धब्बे छूट जाते हैं और रंग सुरक्षित रहते हैं। अरुचि, अर्जीण, भूख की कमी, कब्ज, लीवर की बीमारी पीलिया में इसका साग खाना बहुत लाभकारी है। सामान्य दुर्बलता बुखार के बाद की अरुचि और कमजोरी में इसका साग खाना हितकारी है। धातुँ दुर्बलता में भी बथुए का साग खाना लाभकारी है। बथुए का सेवन सलाद के अन्य द्रव्यों के साथ मिलाकर, भोजन के साथ किया जा सकताहै। बथुए के नियमित सेवन से भूख खुलती है तथा शरीर की समस्त धातुओं का पोषण होता है। बथुए में काफी मात्रा में उपस्थित जीवन-पोषक तत्वों के कारण, इसका नियमित सेवन करने वाले 'कुपोषण' से पीड़ित नहीं होते। गर्भवती एवं प्रसूताओं के लिए भी यह परम हितकर है। यह स्वयं में ही पूर्ण संतुलित आहार-द्रव्य है। बथुए का रस अतिशीघ्र ही रक्त कणिकाओं में वृद्धि करने में समर्थ होता है। बथुए के रस में मिश्री मिलाकर पिलाने से पेशाब की रुकावट दूर होती है। बथुए में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है इसलिए इसके नियमित सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा रतौंधी में भी लाभ होता है। बथुए को बुद्धिवर्धक भी माना गया है।

हकीमों के अनुसार बथुआ ठंडा तथा खुश्क होता है। यह शरीर में शीतलता तथा कोमलता उत्पन्न करता है। यह यकृत-विकारों को दूर करता है। इसके सेवन से नवीन रक्त का निर्माण प्रचुरता से होता है। महिलाओं तथा एनीमिया से पीड़ितों के लिए इसका सेवन वरदान सिद्ध होता है। इसका कुछ दिनों तक सेवन करने से कब्ज दूर हो जाता है और पेट मुलायम बन जाता है। यह ठण्डा होने से 'पीलिया' को भी दूर करता है। पित्त प्रकृतिवालों के लिए यह विशेष रूप से लाभदायक होता है। पित्त के कारण उत्पन्न हुई एसिडिटी, विविध चर्म रोग, सर्वशरीरगत दाह इत्यादि को बथुआ दूर करता है। यकृत में गाँठें पड़ने के कारण होने वाले पीलिया के रोगी को सात माशे बथुए के बीजों को इक्कीस दिन तक

बथुआ खान के स्वास्थ्य लाभ



मलेरिया, बुखार और कालाजार मंक्रामक रोगों में भी फायदेमंद।

नियमित देने से गांठें बिखर जाती हैं तथा पीलिया समाप्त हो जाता है। बथुए का साग 'अर्श' के रोगियों के लिए परम हितकारी सिद्ध होता है। बथुआ/ सियेल का ताजा रस निकाल कर, उसमें नमक मिलाकर पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।बथुए के बीजों के दो ग्राम चूर्ण को थोड़े से नमक एवं शहद के साथ लेने से अमाशय की सफाई होकर, दूषित-पित्त शरीर से बाहर निकल जाता है। बथुए के डेढ़ तोला बीजों को आधा सेर पानी मे उबालें। जब आधा पानी शेष बच जाए, तब उसे छानकर पिलाने से, शिशु- जन्मरत स्त्री को कष्ट-मुक्ति मिल जाती है। यह प्रयोग आज भी हमारे ग्राम्यांचलों में बहु प्रचलित है।

बथुआ के फायदे:- अब तक आपने जाना कि बथुआ/ सियेल को कितने नामों से जानते हैं। आइए अब जानते हैं कि बथुआ/ सियेलके औषधीय प्रयोग, प्रयोग की मात्रा एवं विधियां क्या हैं-

बथुआ का उपयोग कर रक्तपित्त (नाक-कान से खून बहना) की समस्या में लाभ :-नाक-कान आदि अंगों से खून बहने की स्थिति में बथुआ/ सियेल के बीजों (1-2 ग्राम) का चूर्ण बना लें। इसे मधु/ शहद के साथ सेवन करें। इससे रक्तपित्त में लाभ होता है।

दांतों के दर्द में बथुआ का प्रयोग:- दांत में दर्द हो रहा हो तो बथुआ के बीज का चर्ण बनाकर दांतों पर रगडें। इससे दांत का दर्द तो ठीक होता ही है, साथ ही मसूड़ों की सूजन भी कम हो जाती है। बथुआ के पत्तों को उबालकर पीस लें। इसे सूजन वाले अंग पर लगाने से सूजन कम हो जाती है।

बथुआ के सेवन से खांसी का इलाज :- बथुआ/ सियेल के पत्तों की सब्जी बनाकर सेवन करें। इससे खांसी में आराम मिलता ।

पेट में कीड़े होने पर बथुआ का सेवन फायदेमंद :-पेट में कीड़े हो जाने पर बथुआ का उपयोग लाभ पहुंचाता है। बथुआ के रस (5 मिली) में नमक मिलाकर पिएं। इससे पेट के कीड़े खत्म होते हैं।बथुआ के पत्ते में केरिडोल होता है, जिसका प्रयोग आंतों के कीड़े एवं कृमि को खत्म करने के लिए भी किया जाता है।

कब्ज की समस्या में फायदेमंद बथुआ का उपयोगः-कब्ज की समस्या से राहत पाने के लिए बथुआ के पत्तों की सब्जी बनाकर खाएं। इससे कब्ज के साथ-साथ बवासीर, तिल्ली विकार, और लीवर के विकारों में लाभ मिलता है। बथुआ के सेवन से मुत्र रोग में लाभ:- मृत्र रोग को ठीक करने के लिए बथुआ के पत्ते का रस (5 मिली) निकाल लें। इसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से मुत्र विकार खत्म होते हैं।

बथुआ के औषधीय गुण से ल्यूकोरिया रोग में फायदा:-बथुआ का इस्तेमाल ल्यूकोरिया में भी लाभ पहुंचाता है। ल्यूकोरिया से पीड़ित लोग 1-2 ग्राम बथुआ के जड़ को जल या दूध में पकाएं। इसे तीन दिन तक पिएं। इससे ल्यूकोरिया में लाभ होता है।

दस्त में बथुआ का औषधीय गुण फायदेमंदः- दस्त को ठीक करने के लिए बथुआ का सेवन करना फायदा देता है। अनार के रस, दही तथा तेल से युक्त बथुआ की सब्जी का सेवन करें। इससे दस्त में फायदा होता है।

बंथुआ/ सियेल के औषधीय गुण से पेचिश का इलाजः-पेचिश में लाभ लेने के लिए बथुआ के पत्तों की सब्जी बना लें। इसमें घी मिला लें। इसका सेवन करने से पेचिश में लाभ होता है।

खूनी बवासीर में बथुआ खाने के फायदे:- बथुआ/ सियेल का सेवन खूनी बवासीर में भी लाभ पहुंचाता है। बथुआ के पत्ते के रस को बकरी के दूध के साथ सेवन करें। इससे खूनी बवासीर में फायदा होता है।

मोच आने पर बथुआ का उपयोग लाभदायकः- मोच आने पर बथुआ के पत्ते को पीसकर लगाएं। इससे मोच के कारण होने वाले दर्द से आराम मिलता है। जोड़ों के दर्द (गठिया) में बथुआ से फायदा:-जोड़ों में होने वाले दर्द के कारण लोगों को बहुत तकलीफ झेलनी पड़ती है। शरीर के जिस अंग में तकलीफ हो रही हो, उस अंग की गतिशीलता में कमी आ जाती है। आप जोड़ों के दर्द में बथुआ का सेवन करे। इससे जोड़ों के दर्द में भी आराम मिलेगा। बथुआ के पत्ते एवं तना का काढ़ा बनाकर जोड़ों पर लगाएं। इससे जोड़ों का दर्द ठीक होता हैं।

आग से जलने पर **बथुआ का उपयोगः**-आग से कोई अंग जल गया है तो बथुआ/ सियेल के पत्ते के रस को जले हुए स्थान पर लगाएं। इससे लाभ **साइनस में फायदेमंद बथुआ का प्रयोगः-**साइनस में बथुआ/ सियेल के पत्ते और तम्बाकु के फूलों को पीसकर घी में मिलाकर लगाएं। इससे साइनस में फायदा होता है।

बथुआ के सेवन से रोग प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूती:-रोग प्रतिरक्षा शक्ति कमजोर हो जाने पर लोगों को अनेक बीमारियां होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए रोग प्रतिरक्षा शक्ति का मजबूत होना बहुत जरूरी है। जिन लोगों कि रोग प्रतिरक्षा शक्ति कमजोर हो, वे बथुआ के शाक (सब्जी) में सेंधा नमक मिलाकर, छाछ के साथ सेवन करें। इससे रोग से लड़ने की शक्ति (रोग

प्रतिरक्षा शक्ति) मजबूत होती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को करे मजबूत:-रोग प्रतिरोधक तंत्र (इम्यून सिस्टम) के कमजोर होने से कई रोग उत्पन्न हो जाते हैं। बथुआ की सब्जी में सेंधा नमक मिलाकर, छाछ के साथ सेवन करें। इससे रोग से लड़ने की शक्ति मजबूत होती है।

त्वचा रोग में भी फायदेमंदः- बथुआ/ सियेल त्वचा रोग दूर करने में भी सहायक है। अपने रक्तशोधक गुणों के कारण सफेद दाग, दाद, खुजली, फोड़े, कुष्ठ आदि चर्म रोगों में नित्य बथुआ उबालकर, इसका रस पीने और तथा सब्जी खाने से लाभ होता है। देश में लोगों की अस्वास्थ्यकर जीवन शैली के कारण पाचन तंत्र से संबंधित रोग बढ़ रहे हैं। वहीं, डायबिटीज जैसे रोगों के फलस्वरूप अधिकांश लोग कब्ज की समस्या से परेशान रहते हैं। बथुआ फाइबर का प्रमुख स्रोत है, जो पाचन तंत्र से संबंधित रोगों जैसे कब्ज आदि को दूर करने में अत्यंत सहायक है।

चुस्ती लाए:-पोषक तत्वों की खान बथुआ/ सियेल में कैल्शियम, आयरन, मैंग्नीशियम आदि समस्त तत्व पाए जाते हैं। इसलिए बथुए का नियमित प्रयोग शरीर को चुस्ती-फुर्ती और ताकत प्रदान करता है।

हीमोग्लोबिन की कमी दूर करे:-बथुआ में आयरन और फोलिक एसिड पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इसलिए यह हीमोग्लोबिन की कमी को दूर करने में सहायक है। बथुआ महिलाओं के मासिक धर्म की अनियमितता से राहत पाने में भी लाभप्रद हैं।

पथरी की समस्या:- इसी तरह पथरी (स्टोन) की समस्या में भी बथुआ खाना लाभप्रद है। यही नहीं किडनी में इन्फेक्शन और किडनी में स्टोन की समस्या में भी बथुआ/ सियेल फायदेमंद है।

कब्ज की समस्याः - बथुआ/ सियेल आमाशय को ताकत देता है, कब्ज दूर करता है, बथुए की सब्जी दस्तावर होती है, कब्ज वालों को बथुए की सब्जी

पीलिया में फायदेमंदः- बथुआ/ सियेल के साग का सेवन पीलिया के मर्ज में

लाभप्रद है। बथुआ पीलियाँ से बचाव में भी लाभप्रद है। **पेट के लिए लाभप्रदः**- बथुआ/ सियेल के नियमित सेवन से हाजमा सही

रहता है। यह पेट दर्द में भी लाभप्रद है। जोड़ो के दर्द में लाभप्रदः- बथुआ/ सियेल शरीर के विभिन्न जोड़ों के दर्द में लाभप्रद है। इसलिए जो लोग जोड़ों के दर्द से पीड़ित हैं, उन्हें बथुए के साग

का सेवन करना चाहिए। पेशाब/ मूत्र के रोगः-मूत्राशय, गुर्दा और पेशाब के रोगों में बथुए का साग लाभदायक है। पेशाब रुक-रुककर आता हो, कतरा-कतरा सा आता हो तो

इसका रस पीने से पेशाब खुल कर आता है। **बथुआ के उपयोगी भागः-** बथुआ/ सियेल का इस्तेमाल इस तरह से किया जा सकता है:-बथुआ के बीज ,बथुआ के पत्ते, बथुआ के पौधे के तने, बथुआ

वागधारा- बाँसवाडा





वागड़ रेडियो 90.8 एफ.एम. की गतिविधियाँ

"जिंदगी का हर लम्हा कुछ सिखाता है, इस साल ने भी बहुत कुछ सिखाया है पुराना याद

रखिए, नए को सीखते रहिए आप सभी को वागड़ रेडियो 90.8 एफ़.एम. की ओर से नववर्ष की अनंत शुभकामनाएं!! वागड रेडियो 90.8 एफ.एम.और युनिसेफ के तत्वाधान में जयपर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । जिसमें 7 जिलों के सामुदायिक रेडियो स्टेशनों में अपनी भागीदारी निभाई और अपनी अपनी भूमिका को लेकर वर्तमान चुनौतियों पर चर्चा कर अनुभवों को साझा किया।साथ ही वागुधारा संस्था के सचिव व सामुदायिक रेडियो एसोसिएशन के महासचिव श्री जयेश जोशी ने कहा कि सामुदायिक रेडियो समुदाय को कई प्रकार की जानकारियां देने व समुदाय से प्रभावी जुड़ाव बनाने में मददगार रहे हैं। साथ ही बच्चों के अधिकारों, शिक्षा और स्वास्थ्य को लेकर चलाए जा रहे कार्यक्रम 'सच्चा बचपन' में विषय



विशेषज्ञों से चर्चा की गई । जिसमें मुख्य रूप से बालिका शिक्षा. लैंगिक असमानता किशोरियों व महिलाओं के खिलाफ हिंसा और इन सभी विषयों पर

पुरुषों और महिलाओं की अवधारणा को लेकर कार्यक्रम प्रसारित किए गए। और बच्चो के लिए प्रसारित कार्यक्रम 'सुनो कहानी कहो कहानी' में कहानियों के प्रसारण के साथ-साथ कहानी सुनाने वाले कहानी वाचक के साक्षात्कार भी लिए गए जिससे बच्चे जान सके की कहानियों का क्या महत्व है, कहानियां कैसे बनती है,उनका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, और कहानियां सुनने और कहने से क्या-क्या फायदे हो सकते हैं। इन सभी के साथ कार्यक्रम 'सच्चा स्वराज' में ई-श्रम पोर्टल क्या है और श्रमिक स्वराज अभियान में वह अपना रजिस्टेशन कैसे करवाएं साथ ही इसके तहत उन्हें किन-किन योजनाओं का लाभ मिलेगा इसकी जानकारी दी गई।साथ ही कोरोना की तीसरी लहर से बचाव के लिए भी समय-समय पर विशेषज्ञ, चिकित्सकों के साथ कार्यक्रम प्रसारित किए जाएंगे जिसे आप सुन सकते है रेडियो पर 90.8 एफ.एम. और ऑनलाइन सुनने के लिए आप इंटरनेट के माध्यम से वागड़ रेडियो का एप डाऊनलोड कर सकते है । एक बार फिर आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाए !!

सफलता का कहाना

जनजातीय महिलाओं ने अपनाया स्वदेशी बीज स्वराज शेरानगला गांव की वागुधारा गठित सक्षम समूह की महिला कांन्तीदेवी कहती हैं कि — "पुरुष क्या जानते हैं... हम महिलाएं ही हैं, जो बीजों का संरक्षण करती हैं, यह हमारी जिम्मेदारी है। यह हमारे पूर्वजों के समय से हमारी संस्कृति में रहा है। हम ही हैं, जिन्हें पता है कि कौन सा बीज कहां और कितनी मात्रा में लगाना है, भविष्य में उपयोग के लिए कितना बचाना है, खाने के लिए कितना रखना है ...पुरुषों को इस सब के बारे में ज्यादा चिंता नहीं हैं।" बहुसंख्यक आदिवासी परिवारों वाला यह गाँव,राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में स्थित ऐसे कई गाँवों में से एक है। फसल विविधता और सहनशीलता के बीच गहरे संबंध को समझते हुए,वाग्धारा संस्था की महिला सक्षम समूह की किसानों ने यह सुनिश्चित किया है कि जलवायु-सहनशील पारम्परिक बीजों

के संरक्षण की प्रथा जारी रहे इसके लिए यह समुह प्रयासरत है । सामाजिक आर्थिक और जाति जनगणना (SECC)-2011 के अनुसार, जिले के 76.38 % से ज्यादा परिवार अनुसूचित जनजाति से सम्बंधित हैं, वे मुख्य रूप से जनजातीय आदिवासी समूहों से संबंधित हैं। इस क्षेत्र में रहने वाली ये जनजातियाँ,मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं। कृषि कार्य न होने पर ये रोजगार हेतू गुजरात जाते है और दिहाड़ी मजदूरी उनकी आजीविका के अन्य स्रोत हैं।

SECC-2011 के अनुसार, बाँसवाड़ा जिले की लगभग 58% भूमि असिंचित है; लोग धान, गेहूं ,मक्का,अरहर, मुंग व अन्य दालों साथ साथ अन्य फसलों की भी वर्षा आधारित खेती करते हैं। फलवा गांव की कुकुंदेवी मसार ने मुस्कुराते हुए कहा कि उनकी खेती ऊपर वाले की दया पर है।

कुकुंदेवी कहती हैं - "धान और मक्का के अलावा, हम अपने आंगन में पत्तेदार सब्जियों और भिंडी, चपटी फलियाँ, टमाटर, बैंगन, मिर्च, कद्दू और हल्दी जैसी अन्य सब्जियों की खेती करते हैं जो वागुधारा हमें बीज देती हैं । हमारे पास सीताफल,पपीता और आम के पेड़ भी हैं, जो हमारी घरेलू जरूरतों को पूरा करते हैं।" विविधता और लचीलेपन के गहरे संबंध के साथ कृषि के इस जटिल माहौल में, महिलाएं स्वदेशी बीजों की इस विशाल विविधता को संरक्षक के रूप में, सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महिलाएँ एवं बीज संरक्षण दुनिया भर के अन्य समुदायों की तरह,इस क्षेत्र के आदिवासी जनजातीय स्वराज संगठन और सक्षम महिला समूहों से संबंधित महिलाएं, बीज सुरक्षा और बीज संरक्षण सम्बंधित ज्ञान, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उन्होंने ये कैसे सीखा, कितने समय से वे ऐसा कर रही हैं -इन सवालों पर उलझन भरे भाव देखने को मिलते हैं और प्रतिक्रिया होती है -"जितना हमें याद है, तब से हम ऐसा कर रहे हैं, बचपन से हमने अपनी माताओं को ऐसा

करते देखा है और हमने सिर्फ वह करना जारी रखा।"

कृषि व्यवस्था में महिलाओं को मिली सामाजिक भूमिका से भी यह ज्ञान कुछ हद तक प्रभावित हुआ है। वाग्धारा गठित महिला सक्षम समूह की सदस्य लाली अमृतलाल डामोर कहती हैं - "फसल काटते समय हम देखते हैं कि खेत के किस हिस्से में फसल बेहतर हुई है। हम बीजों का उनके वजन और गुणवत्ता के आधार पर आंकलन करते हैं और थ्रेसिंग करते समय इसे अलग रखते हैं।" यह हमारे बाप दादा का बीज संग्रहण करने का तरीका है जो हम करते आ रहे है।

वागधारा की सक्षम समृह की महिलायें फसल विविधता को बनाए रखने हेतू महिला किसान चुने हुए बीज एक बोरी में भरती हैं, इसे सील करती हैं और इसे अगले सीजन तक के लिए अन्न भंडार में रख देती हैं, जिसे वहां 'कोठी'

कहा जाता है। सक्षम महिला समूह की सदस्य कांता डामोर कहती हैं -"इसी तरह सब्जी के बीज के लिए, फल पक जाने के बाद, हम इसे सूखने देते हैं, बीज अलग करते हैं और फिर उन्हें संग्रहण कर लेते हैं। जब बुवाई का समय नजदीक आता है, तो हम उन्हें उपयोग के लिए निकाल लेते हैं।" उनकी बात पर सहमति जताते हुए, नानाभुखीया गाँव की वागुधारा गठित सक्षम महिला समूह की

सदस्य शिल्पा रमनलाल डामोर कहती हैं - "हम जानते हैं कि आँगन के किस हिस्से में कितना बीज बोना है। क्योंकि हमें पता है की अपने परिवार के लिए कितनी जरूरत है, इसलिए हम उसी के अनुसार बीज बोते हैं।"

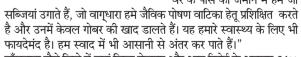
नानाभुखीया गाँव की सक्षम महिला समुह की अन्य महिला किसान, सुशीला भिखाँ डामोर ने समझाया कि कैसे यह पद्धति सहनशीलता प्रणालियों को बनाए रखने के ज्ञान के साथ मजबूती से प्रतिध्वनित होती है। उनका कहना था - "हमें विभिन्न प्रकार के बीजों की जरूरत होती है। प्रत्येक जमीन एक अलग तरह की फसल के लिए उपयुक्त होती है। कुछ जल-जमाव वाली मिट्टी में अच्छी उगती हैं, कुछ कम पानी वाली ढलानदार भूमि पर। हम उसी के अनुसार फैसला करते हैं।"

सुशीला डामोर कहती हैं -"पाथरीया ,जीरा ,काली कमोद और मोटा धान जैसी धान के बीजों की पारंपरिक किस्मों में बारिश के पैटर्न में बदलाव को झेलने और मानसून के मौसम के बीच सूखे के दौरान बचे रहने की ज्यादा

क्षमता होती है।" वर्तमान हालात में. जबकि ग्रामीण समदाय जलवाय परिवर्तन एवं अनिश्चित वर्षा के विषम प्रभाव का सामना कर रहे हैं, ऐसे में बचे रहने के लिए उतार-चढाव वाली सुक्ष्म-जलवाय की स्थितियों के प्रति सहनशीलता महत्वपूर्ण है।

पारंपरिक बीज संरक्षण से कम हुई बाजार निर्भरता - बीज संरक्षण का तत्काल प्रभाव यह है कि बीज के साथ-साथ भोजन की खरीद के लिए बाजार पर निर्भरता कम हुई है। बड़े संतोष के साथ काली देवी हरदार कहती हैं कि विगत 40 साल से मैने खेती के लिये बीज नहीं खरीदा है।"और अपने पैसे बचाये है । इसी तरह,घर के आसपास उगाई जाने वाली सब्जियां, महिलाओं को सब्जियां खरीदने के लिए बाजार पर निर्भरता कम करने में मदद करती हैं। काली देवी हरदार कहती हैं – "चाहे हम कुछ महीनों के लिए अपने घर की

जरूरतें पूरा कर पाते हों, फिर भी यह हमारे लिए काफी है। यह हमें पैसे बचाने में मदद करता है, जो हमें बाजार से सब्जियां खरीदने के लिए खर्च करने पड़ते थे।" वण्डा गाव के वाग्धारा संस्था गठित सक्षम महिला समूह की सदस्य राधा प्रकाश कटारा ने जोर देकर कहा -"बाजार में हमें जो सब्जियां मिलती हैं,वे रसायनों से भरी होती हैं । अपने घर के पास की जमीन में हम जो



बॉसवाडा जैसे जिले में,जहां जिला रोजगार और आय रिपोर्ट के अनुसार,91% से ज्यादा परिवारों की मासिक आय 5,000 रुपये से कम है, उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए नकद आय पर निर्भरता बेहद महत्वपूर्ण है।

बीजों का आदान-प्रदान

यदि कोई परिवार कोई बीज संरक्षित न कर पाए और उसे इसकी जरूरत पड़ जाए, तो क्या होता है ? बीज संरक्षण का चलन, बीज के आदान-प्रदान की एक दूसरी पारम्परिक व्यवस्था के साथ गहराई से जुड़ा है, जो यहां के समुदायों के सामाजिक ताने-बाने में गहराई से गुंथा हुआ है।

वन्डा गाँव की किसान महिला बबली कटारा जो वाग्धारा गठित समूह में हैं वो कहती है की- "यदि मेरे पास कोई खास बीज नहीं है,लेकिन मेरे पड़ोसी के

पास है,तो मैं उससे कुछ बीज ले लूंगी और बदले में मैं उसे वह दे दूँगी,जो मेरे पास है और उसके पास नहीं है । इस साल मैंने उससे भिंडी और लौकी के बीज लिए और उसे कदू के बीज दिए।'

पूरे गांव की महिलाएं इस प्रथा का पालन करती हैं । बबली कटारा कहती हैं - "यह प्रथा तब से चली रही है,जब तक का मुझे याद है।"इससे एक परिवार द्वारा उगाई जाने वाली फसलों की विविधता को बनाए रखने के साथ-साथ, समुदाय की बीज के लिए बाजार पर निर्भरता को कम करने में भी बड़ी मदद मिलती है।

विभिन्न प्रकार के बीजों की जरूरत के बारे में महिलाओं का नजिरया, एक लचीली प्रणाली के साथ प्रतिध्वनित होता है

केवल बीजों का आदान-प्रदान ही नहीं होता है, बल्कि उपज का भी होता है। बबली कटारा का कहना था – "यदि किसी के खेत में सब्जियों का उत्पादन ज्यादा हो जाता है, तो गांव का कोई भी व्यक्ति उनसे सब्जियां मुफ्त ले सकता है।"

बीजों के इस आदान-प्रदान को आसान बनाने में, ग्रामीण संस्थाएँ भी भूमिका निभाती हैं। बाजार की ताकतों के गांवों में प्रवेश कर जाने के कारण, कृषि पद्धतियों में उन्नत किस्म और संकर बीजों का धीमा लेकिन लगातार प्रवेश

फिर भी ऐसे मामलों में, महिलाओं के नेतृत्व में ग्रामीण संस्थाओं ने पारम्परिक किस्मों के बीजों के आदान-प्रदान और इस्तेमाल को पुनर्जीवित करने के लिए मंच तैयार किए हैं । आनंदपुरी ब्लॉक के पाट गाँव की एक वाग्धारा गठित महिला सक्षम समूह किसान,बबली कटारा ने कहा - "पार्थारया, काली कमोद और जीरा जैसी धान की विभिन्न पारम्परिक किस्मों के बीज बाजु के रुपखेडा गांव से लाकर अपने गांव के किसानों में वितरित किए है ।"

इस तरह का आदान-प्रदान इस शर्त पर होता है कि प्राप्तकर्ता फसल के बाद, गांव के ज्यादा किसानों को बीज देगा । बबली कटारा कहती हैं -"गांव की महिलाएं भी बैठकों में एक दूसरे के साथ सब्जी के बीज का आदान-प्रदान कर रही हैं। पहले मैं केवल एक या दो महिलाओं के साथ बीजों का लेन देन कर पाती थी, अब अपनी बैठकों में,मैं और ज्यादा महिलाओं के साथ बीजों का आदान-प्रदान कर सकती हूँ।'

कई गांवों ने इस प्रथा को और अधिक प्रोत्साहन देने के लिए, बीज आदान-प्रदान उत्सव मनाना भी शुरू कर दिया है । इस क्षेत्र में रहने वाली महिलाएं, बीज संरक्षण और आदान-प्रदान की इन व्यवस्थाओं के संरक्षण और बचाव के लिए दृढ़ संकल्प हैं ।

> विकास परशराम मेश्राम वाग्धारा

वागड़ रेडियो <mark>90.8 FM</mark> वाग्धारा, कुपड़ा



अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001 फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -rad lo@vaagdhara.org

केवल आंतरिक प्रसारण है ।

••••••• परमेश पाटीदार । सार्गदर्शक : **दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार** । सुख्य संकलक : **परमेश पाटीदार** । सहसंकलक : **जागृती भट्ट** । ••••••